हँसती दुनिया



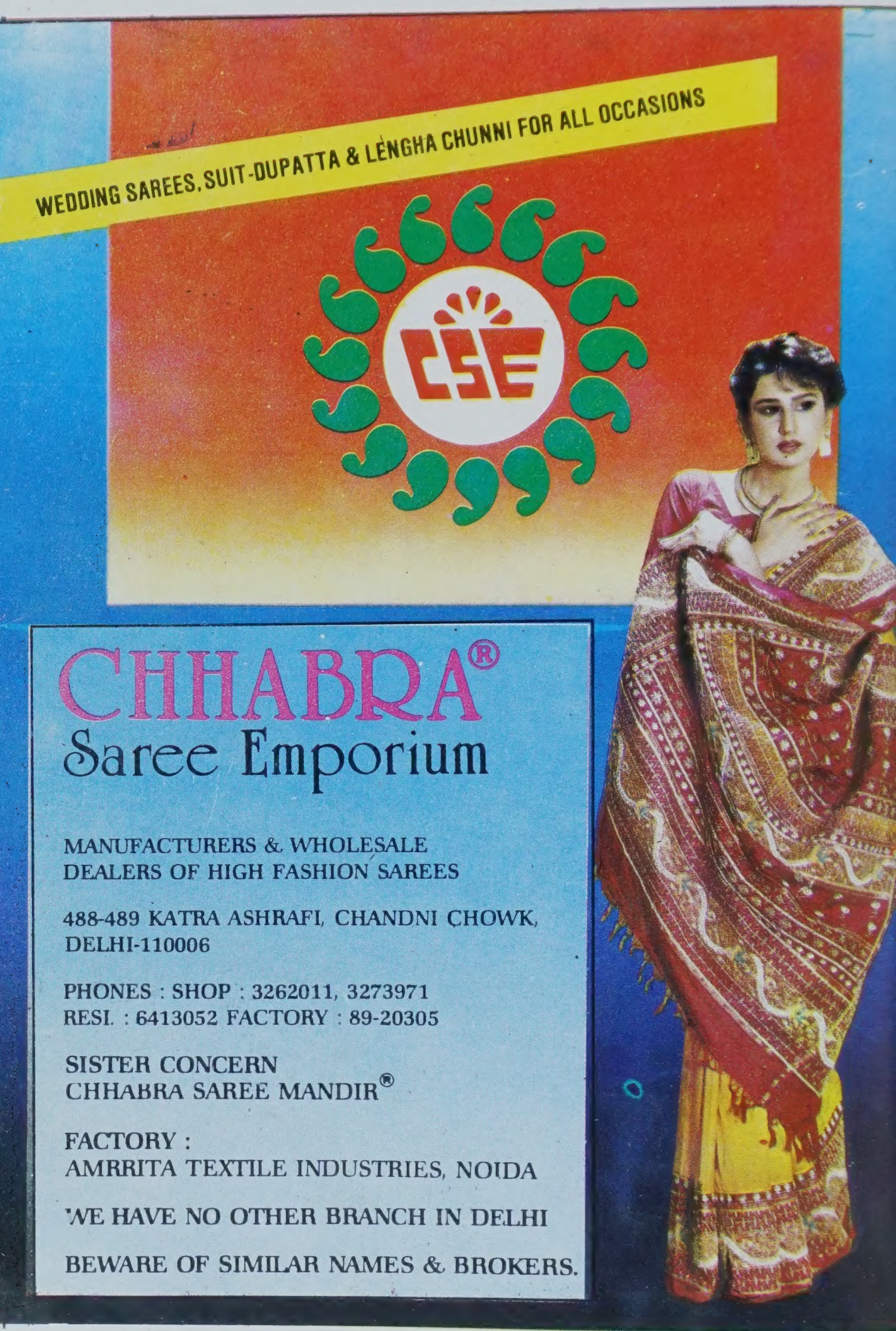








सितम्बर
1999


WEDDING SAREES, SUIT-DUPATTA & LENGHA CHUNNI FOR ALL OCCASIONS
CSE
CHHABRA®
Saree Emporium
MANUFACTURERS & WHOLESALE
DEALERS OF HIGH FASHION SAREES
488-489 KATRA ASHRAFI, CHANDNI CHOWK,
DELHI-110006
PHONES : SHOP : 3262011, 3273971
RESI. : 6413052 FACTORY : 89-20305
SISTER CONCERN
CHHABRA SAREE MANDIR®
FACTORY :
AMRRITA TEXTILE INDUSTRIES, NOIDA
WE HAVE NO OTHER BRANCH IN DELHI
BEWARE OF SIMILAR NAMES & BROKERS.

वर्ष 26
अंक 9

हँसती दुनिया

(बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका)

सितम्बर
1999

कहानियां

कविताएं

लेख

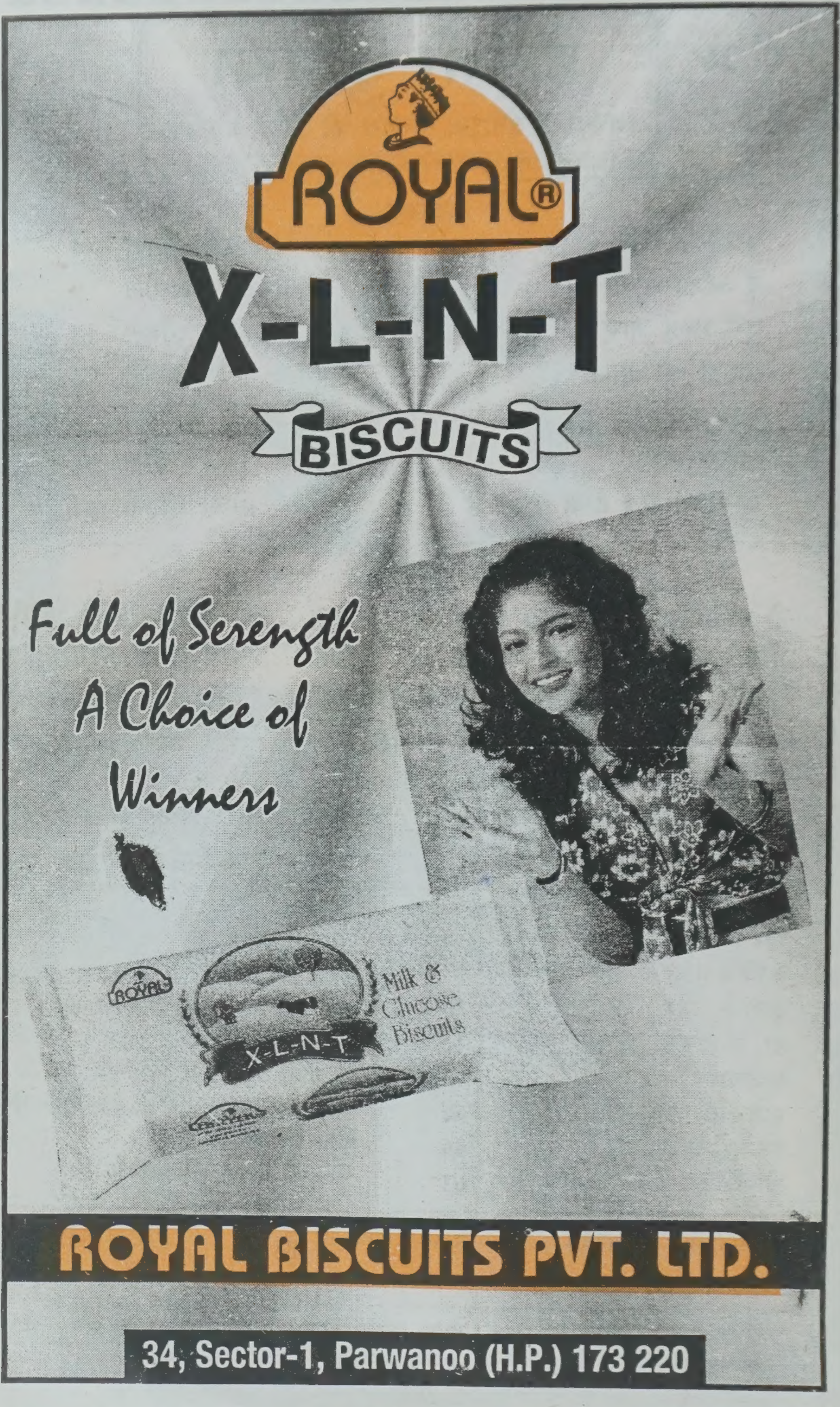
स्तम्भ

चित्रकथाएं

प्रकाशक एवं मुद्रक श्री निर्मल जोशी ने सन्त निरंकारी मण्डल, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली-9 के लिये, हरदेव प्रिंटर्ज निरंकारी कालोनी, दिल्ली-9 में मुद्रित करवाया।
कार्यालय फोन : 7430181

सम्पादक (अवैतनिक) विनय जोशी
सहायक सम्पादक विमलेश आहूजा
कला निर्देशक दीपक बग्गा

वार्षिक चन्दा : 30/- रु. इंग्लैण्ड £ 7, अमेरिका $ 12 कनाडा $ 15
जीवन-पर्यन्त : 300/- रु. इंग्लैण्ड £ 100, अमेरिका $ 150 $ 200
एक प्रति : 4/- रु



ROYAL®
X-L-N-T
BISCUITS
Full of Serength
A Choice of
Winners
ROYAL
X-L-N-T
Milk &
Glucose
Biscuits
ROYAL BISCUITS PVT. LTD.
34, Sector-1, Parwanoo (H.P.) 173 220

सबसे पहले

राजू और तोलू मित्र थे। दोनों को नये-नये कार्य व खेल आदि सीखने का उत्साह रहता था। दोनों ने इस बार जूडो सीखना प्रारम्भ किया। कुछ ही महीनों में वे जूडो का खेल इतना सीख गये कि आस-पास के लड़कों पर रौब जमा सकें।

एक दिन जब स्कूल में रीमा के लंच बाक्स का ढ़क्कन नहीं खुल रहा था तो कइयों ने जोर लगाकर उसे खोलने का प्रयास किया पर वह खुला नहीं। तभी राजू को जूडो-कराटे में सीखे गये खुले हाथों का प्रयोग याद आ गया। बस, फिर क्या था! उसने एक झटके से कराटे का ऐसा दाव डिब्बे पर मारा कि ढ़क्कन तो खुलकर वो दूर जा गिरा और उसमें पड़ा खाना भी बिखर गया। बेचारी रीमा को उस दिन भूखा ही रहना पड़ा। इस प्रकार राजू की ताकत का रौब सब पर पड़ गया। भले ही रीमा की डिब्बे का ढ़क्कन भी टेढ़ा हो गया था।

अब तो पूरे विद्यालय में राजू की धाक जम गई। जो दिल में आता किसी को कुछ भी कह देता, सामने वाला बेचारा लाचार-सा दिखाई देता। इसी प्रकार करते-करते राजू का दिमाग़ चढ़ गया। अब उसने इस खेल को रौब डालने का साधन बना लिया था। जूडो की प्रैक्टिस उसने पूरी तरह छोड़ दी।

उधर तोलू निरन्तर अभ्यास करता रहता। वह अपनी कला का सद्-उपयोग करता था। इस बार स्कूल की वार्षिक खेल-प्रतियोगिताएं हुईं। उसमें जूडो-कराटे का मुकाबला भी होना था। विद्यालय में ये दोनों दोस्त अन्तिम राऊण्ड में आमने-सामने हुए। राजू को लग रहा था- उससे डरकर कोई उसके सामने ही नहीं आयेगा। परन्तु राजू के सामने उसी का दोस्त था। मज़े की बात यह थी कि राजू एक मिनट में ही हार मान गया। वह दोबारा उठा ही नहीं। अपना-सा मुँह बनाकर उसने अपनी हार स्वीकार कर ली।

तोलू ने उसके कन्धे पर हाथ रखकर कहा—राजू आधा-अधूरा ज्ञान सदा हानिकारक होता है। उसी से अहंकार भी हो जाता है; फिर प्रगति रुक जाती है व झूठ की दुनिया में प्रवेश शुरू हो जाता है। इसलिये कोशिश करो ज्ञान पूरा प्राप्त करो ताकि विनम्रता बनी रहे। शक्ति बढ़ती रहे प्रगति होती रहे। सार्थक कर्म होते रहें।

राजू को बात समझ में आ गई। बहादुर साथियों! तुम सब भी यह याद रखना-हँसती दुनिया परिवार के बच्चे जागरूक व सफल रहते हैं।

– विनय जोशी

दन्तकथाः कवि प्रसाद

बुराई का फल



सुन्दरवन का राजा शेर सिंह एक बार बहुत बीमार हुआ और अपनी गुफा में पड़ा रहा। यह देखकर जंगल के सभी पशु बहुत चिंतित हुए। वे प्रतिदिन उसकी खबर लेने जाते, तरह-तरह से उसकी दवा दारू कराते और बराबर उसकी सेवा टहल में लगे रहते। परन्तु उनकी यह दौड़-धूप यह दवा-दारू और यह सेवा-टहल किसी काम न आयी। न तो सिंह का रोग दूर हुआ न उसे कुछ आराम ही मिला। एक दिन सिंह ने सभी पशुओं पर नजर डालते हुए कहा—गीदड़ दिखाई नहीं देता; मैं कब से बीमार पड़ा हूँ। परन्तु वह एक दिन भी मेरी खबर लेने नहीं आया। कुछ पता है उसका? वह तुम लोगों से मिलता-जुलता भी है या नहीं?

भेड़िया जैसे इसी मौके की तलाश में था। वह गीदड़ से जलता था। सिंह की बातें सुनते ही हाथ बांधकर सामने आया और बोला—उसका नाम न लीजिए सरकार, आजकल उसे इतना घमण्ड हो गया है कि वह सीधे मुँह किसी से बात

भी नहीं करता। मैंने उसे कहा भी — महाशय, आजकल महाराज बहुत बीमार हैं जाओ उनकी खबर ले आओ, परन्तु उसने उत्तर दिया—भाड़ में जाए महाराज! जिस दिन वे मरेंगे मैं स्वयं जंगल का राजा बनूँगा और आनन्द मनाऊँगा। मैं तो उसकी बात सुनकर सन्न रह गया सरकार।

इसी समय अचानक गीदड़ भी वहाँ आ पहुंचा। उसके कानों में भेड़िए की बातें पड़ गईं। इसलिए वह डरते-डरते राजा सिंह के सामने खड़ा हो रहा। गीदड़ पर नजर पड़ते ही सिंह का क्रोध भड़क उठा और वह गुर्राकर बोला—क्यों रे, बदमाश, मैं इतने दिनों से यहाँ बीमार पड़ा हूँ और तू एक बार भी मेरी खबर लेने नहीं आया! सुना है आजकल तुझे बड़ा घमण्ड हो गया है। बोल कहाँ था अब तक?



गीदड़ ने हाथ जोड़कर कहा—अन्नदाता, जिस दिन से आप बीमार पड़े हैं उस दिन से मैं घड़ी भर को भी आराम से नहीं बैठा। यह ठीक है कि सब लोग यहाँ आपकी सेवा टहल में लगे हुए हैं परन्तु मैं तो आपकी बीमारी दूर करने के लिए दवा की तलाश में लगा रहा हूँ। भूख-प्यास सहते हुए जंगल-जंगल भटकता फिरा हूँ। इतनी दौड़ धूप करने के बाद अभी-अभी एक वैद्य जी मिले। जब मैंने उनको आपकी बीमारी का हाल सुनाया तब उन्होंने हँसते-हँसते कहा—इसमें चिन्ता की क्या जरूरत है, यह कौन सा बड़ा रोग है। चुटकी बजाते फुर्र हो जायेगा जरा सी दवा से इस बीमारी को।



यह बात सुनते ही सिंह की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। वह गीदड़ की बात काटकर बोला...तभी तो मैं कहता था कि गीदड़ मेरा परम मित्र है। वह बिना कारण इतने दिनों तक गायब नहीं रह सकता। अच्छा तो तुम पूछ आए बैद्य जी से दवा?

गीदड़ ने कहा— अन्नदाता भला मैं बैद्य जी से दवा पूछे बिना कैसे मान सकता था? पहले तो वे टाल-मटोल करते रहे परन्तु जब मैं हाथ धोकर पीछे पड़ गया तब उन्होंने बताया जाओ महाराज से कह दो यदि वे बीमारी को दूर करना चाहें तो भेड़िये का ताजा चमड़ा ओढ़ लें। बस वही इस रोग की सबसे उत्तम दवा है। वे ज्यों ही भेड़िये का ताजा चमड़ा ओढ़ेंगे तो ही उनकी बीमारी दूर हो जायेगी।

यह सुनते ही सिंह गरजकर भेड़िये पर टूट पड़ा और उसकी खाल उधेड़ने लगा। अब तो गीदड़ मन ही मन खुश होकर कहने लगा, मेरी बुराई करने चला था खुद ही बुराई का शिकार हो गया।

तभी किसी ने सच कहा था जो दूसरों के लिए खाई खोदता है उसके लिए कुआं तैयार रहता है। ●

दो बाल गीत : दिनेश 'दर्पण'

1. नेता बनकर



नेता बनकर चूहेमल जी—
वोट मांगने आये,
चढ़े मंच पर भाषण देने—
मद में थे इतराये।
जोश-जोश में उल्टे सीधे
सपने खूब दिखाये,
वादों की झोली खोलकर,
वादे खूब लुटाये।
तभी कहीं से बिल्ली आई,
बोली म्याऊँ म्याऊँ।
वादे पूरे करना-वरना,
तुझको कच्चा खाऊँ।
सुन बिल्ली की चुनौती भारी,
चूहेमल घबराये,
सिर पर पैर रखकर भैया,
भागे दुम दबाये।।

2. बिल्ली का घोषणा पत्र

भारी मत से हरा शेर को—
बिल्ली थी मुस्काई,
सब चूहों को झांसा देकर,
प्रेस कांफ्रेस बुलवाई।
बोली हिंसा धर्म नहीं मेरा,
न चूहों को खाऊँगी।
लेकिन इतना याद रखो तुम,
जब चाहूँ तब आऊँगी,
अगर नहीं आ पाई मैं तो,
फिर तुमको आना होगा।
और साथ में रंग बिरंगे,
गुलदस्ते लाना होगा।



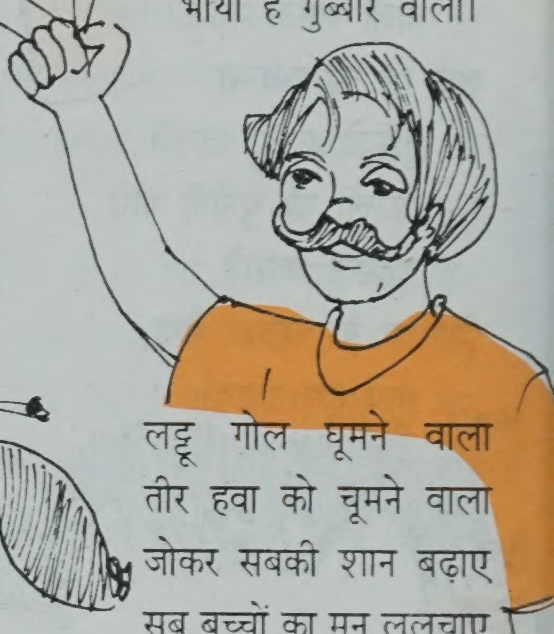
कविता: डा. अजय जनमेजय

गुब्बारे वाला

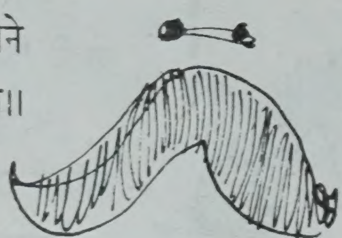


गैस भरे गुब्बारे लेकर
आया है गुब्बारे वाला

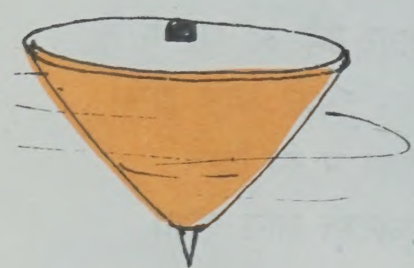
कुछ गुब्बारें छोटे छोटे
कुछ हैं लम्बे कुछ हैं मोटे
लाल हरे नीले तुम ले लो
चाहो तो पीले तुम ले लो
कभी बजाकर सीटी अपनी
कभी दिखाकर पीटी अपनी
बच्चों की टोली को देखो
भाया है गुब्बारे वाला।

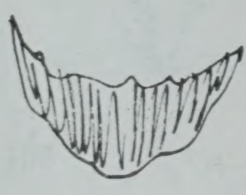


नकली मूँछें नकली दाढ़ी
चाहे ले लो मोटर गाड़ी
चश्में कई रंग के देखो
गुड्डे ढंग ढंग के देखो
बंदर हाथी भालू भी है
भों भों कुत्ता कालू भी है
जाने क्या-क्या खेल खिलौने
लाया है गुब्बारे वाला।।



लट्टू गोल घूमने वाला
तीर हवा को चूमने वाला
जोकर सबकी शान बढ़ाए
सब बच्चों का मन ललचाए
जिसको देखो पास खड़ा है
बच्चों में उल्लास बड़ा है
बड़े दिनों के बाद इन्हें फिर
पाया है गुब्बारे वाला।।





लोककथा : मनजीत जनागल

यूँ आँख खुली

एक बार की बात है एक राजा था। राजा का राज्य बहुत विशाल था। लेकिन उसके कोई संतान नहीं थी। जिसके कारण वह बहुत ही दुःखी रहता था।

एक दिन एक लोभी एवं पाखण्डी तांत्रिक व्यक्ति ने राजा से कहा—हे राजन, अगर तू संतान की प्राप्ति करना चाहता है तो तुझे किसी लड़के की बलि देनी होगी।

राजा ने उस आदमी की बात सुनी। उसका स्वार्थ जाग गया। उसने अपने एक मन्त्री से कहा—जाओ राज्य में घोषणा करो कि जो भी व्यक्ति अपने लड़के को बलि देने के लिए लाएगा उसे मालामाल कर दिया जाएगा।

घोषणा कर दी गई। परन्तु कोई भी व्यक्ति इस कार्य के लिए आगे नहीं आया। कई दिन बीत गए। कोई भी अपने लड़के को लेकर न आया तो राजा ने सोचा बलि तो देनी ही है राजा ने किसी एक घर से एक वर्ष का एक लड़का उठवा





लिया। घर वाले बहुत ही बिलाप-प्रलाप किया परन्तु वे क्या करते? आखिर राजा का हुक्म था। वे दबे घुटे रह गए।

राजा ने उस लड़के को जल्लादों के हाथों में सौंप दिया और कहा—इसकी बलि देकर मुझे इसका एक अंग काट कर दिखाना। जिससे मुझे यकीन हो जाए कि इसकी बलि दे दी गई है। राजा इतना कहकर वहाँ से चला गया।

जल्लादों ने लड़के को बलि देने के लिए तैयार किया तो उसका मासूम चेहरा देख उनको उस पर तरस आ गया। उन्होंने उसका एक अंगूठा काट कर उसे छोड़ दिया। जल्लादों ने राजा को अंगूठा दिखाया और कहा—हमने उसकी बलि दे दी है।

उधर वह लड़का जीवित अपने घर पहुँच गया। घर वालों ने लड़के को देखा तो प्रभु के आगे प्रार्थना की कि हे प्रभु! तुमने राजा से हमारे लड़के को छुड़वा दिया है तुम उसके घर में भी रोशनी कर दो। उसको भी पुत्र दे दो।

प्रभु भक्तों की प्रार्थना मान ली गई। कुछ समय बीता। राजा के घर संतान पैदा हो गई। राजा बहुत ही खुश था। राजा के पास वह आदमी पहुँचा जिसने राजा को कहा था कि किसी लड़के की बलि दो। राजा यही समझ रहा था कि



बच्चे की बलि के कारण ही उसे सन्तान मिली है। इसलिए राजा ने उस आदमी को धन से मालामाल कर दिया।

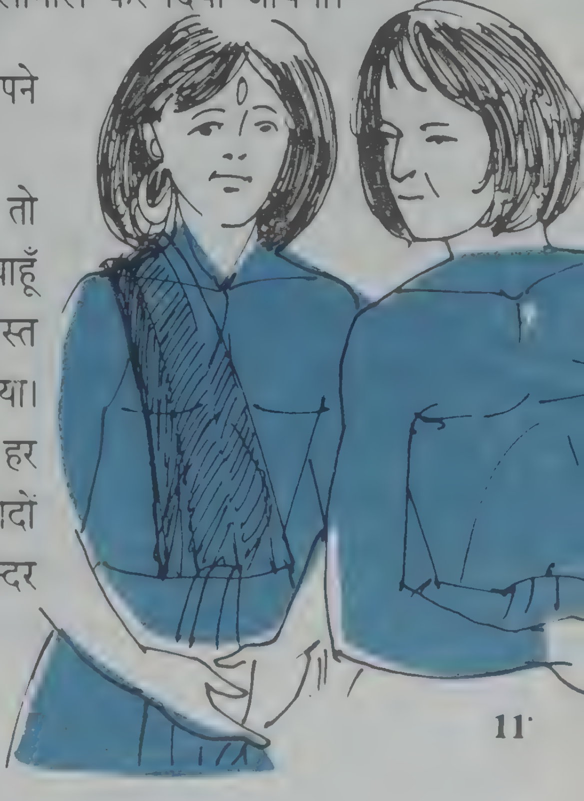
कुछ समय बाद राजकुमार जवान हो गया। अब वह बाहर शिकार पर भी जाने लगा था। जब वह महल से बाहर निकलता तो उसे लगता कि जैसे वह बहुत ही अकेला है। परन्तु संयोगवश वही लड़का राजकुमार का दोस्त बन गया जिसको राजा ने बलि के लिए चुना था। उनकी दोस्ती गहरी होती गई। वे हमेशा साथ-साथ ही रहते। जुदा होने का नाम ही न लेते।

उधर उस लोभी व्यक्ति के पास धन खत्म हो गया। वह एक बार फिर राजा के पास पहुँचा और उससे फिर कहा—हे राजन! अगर तुम अपने राजकुमार को जिंदा देखना चाहते हो तो एक और बलि देनी होगी।

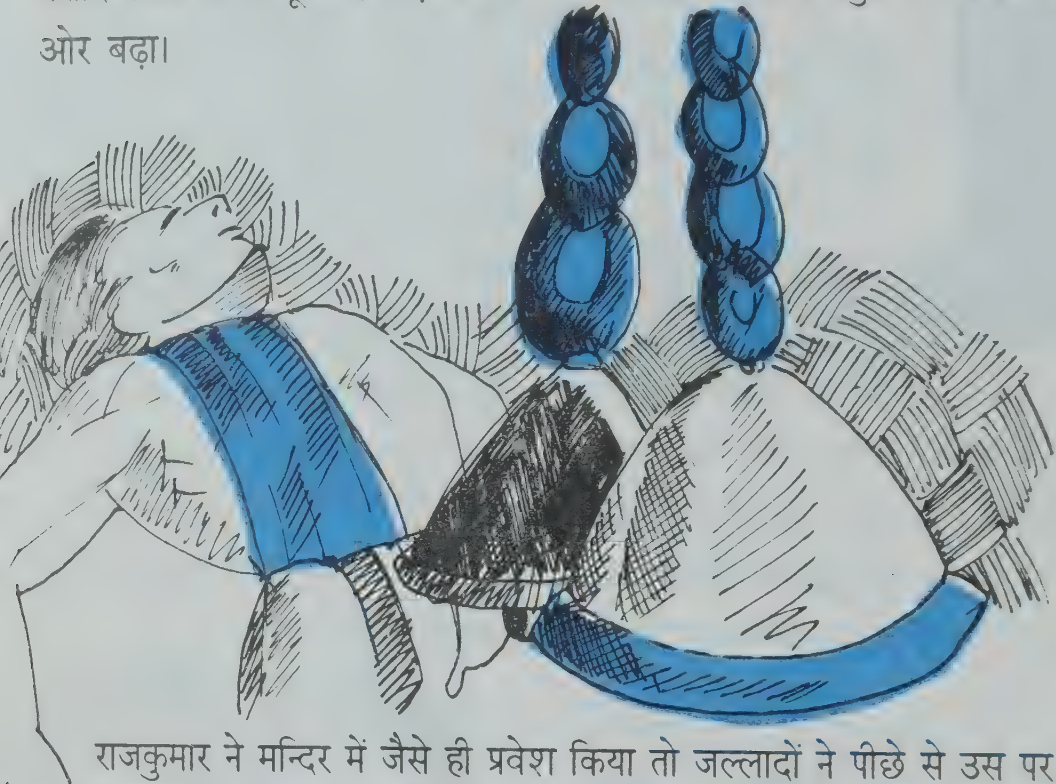
राजा ने फिर घोषणा कर दी जो व्यक्ति भी अपने लड़के को बलि देने के लिए लाएगा उसे अपार धन देकर मालामाल कर दिया जायेगा।

परन्तु इस बार भी कोई व्यक्ति अपने लड़के को महल में लेकर न पहुँचा।

राजा ने फिर क्रूरतावश सोचा बलि तो देनी ही है मैं राजा हूँ आखिर मैं जो चाहूँ कर सकता हूँ। राजा ने राजकुमार के दोस्त को ही बलि चढ़ा देने का मन बना लिया। राजा ने सोचा राजकुमार का वह दोस्त हर रोज मन्दिर तो जाता ही है। राजा ने जल्लादों से कहा—जब राजकुमार का दोस्त मन्दिर जाए तो उसे वहीं ही मार डालो।



दूसरे दिन राजकुमार का दोस्त अपने निश्चित समय पर मन्दिर की ओर चल पड़ा। उधर जल्लाद भी मन्दिर छुपकर खड़े हो गए। राजकुमार का दोस्त अभी कुछ कदम ही चला था कि पीछे से आवाज आई—दोस्त रूक जा। जब उसने पीछे मुड़कर देखा तो पीछे राजकुमार था। राजकुमार ने कहा—मित्र, तेरी माँ बहुत ही बीमार हो गई है तू जल्दी से घर जा। मन्दिर मैं होकर आता हूँ। तेरे लिए प्रसाद लेकर आता हूँ। वह लड़का घर की ओर चल दिया। राजकुमार मन्दिर की ओर बढ़ा।



राजकुमार ने मन्दिर में जैसे ही प्रवेश किया तो जल्लादों ने पीछे से उस पर वार कर दिया परन्तु जब उन्हें पता चला कि यह तो राजकुमार है तो वे वहाँ से भाग पड़े। महल में जाकर राजा को बताया कि राजकुमार के दोस्त की जगह राजकुमार ही मारा गया है। यह सुनते ही राजा के होश उड़ गये और राजा मन्दिर की ओर चल पड़ा। राजा ने देखा कि राजकुमार मरा पड़ा है, राजा विलाप करने लगा।

उधर राजकुमार के दोस्त को भी पता चला कि राजकुमार मारा गया है। वह भी दौड़कर मन्दिर पहुँचा। उसने देखा राजकुमार मरा पड़ा है राजकुमार के दोस्त ने कहा—हे राजन! ये तेरे पापों का फल है जो आज तू भुगत रहा है तुमने मुझे



पहले भी बलि देने की सोची थी। तब भी मैं प्रभु की कृपा से बच गया। अब फिर तुमने मुझे बलि देने की कोशिश की। जिसका फल यह हुआ कि तुम्हारा ही बेटा मारा गया। राजकुमार के दोस्त ने प्रभु के आगे प्रार्थना की और कहा—हे प्रभु हमारे राजा को सद्बुद्धि दो और राजकुमार को जिन्दा कर दो।

राजकुमार तो जिन्दा नहीं हुआ परन्तु प्रभु की कृपा से राजा को आभास होने लगा कि जैसे उसे प्रभु से प्रेरणा मिल रही थी कि हे राजन! अगर तू किसी से बुरा करेगा तो पहले तेरा ही बुरा होगा। अब तू अपने बेटे को इस लड़के के रूप में ही देखा कर। उसकी आँखें जैसे खुल गई। राजा ने सोचा— अगर तू किसी को कष्ट देगा तो पहले तू ही कष्ट पायेगा। इसलिए अगर कोई बुराई करता है तो उसके साथ हमेशा अच्छा ही करना। राजा ने प्रभु की शिक्षा अपनायी और किसी भी लालसा को न जन्म देने की कसम खाई और हमेशा बुरे के साथ अच्छा करना शुरू कर दिया। उसे समझ आ गई कि 'बुरे का फल बुरा' ही होता है। पूरी प्रजा को और विशेष उस लड़के को राजा ने अपनी सन्तान की तरह ही पाला पोसा। ❑

कहानी: कुंवर प्रेमिल

बुरी-भली जीभ



एक दिन गुरूजी ने कक्षा में पूछा—गाँधी जी ने अपने तीन सिद्धान्त (बुरा मत बोलो, बुरा मत सुनो, बुरा मत देखो) के क्रम में रखे हैं उन्होंने ऐसा क्यों किया? उनके इन सिद्धान्तों हमें क्या शिक्षा मिलती है?

गुरू जी थोड़ा रुककर फिर बोले—और तुम्हें वह सिद्धान्त भी बताना है जिस पर बाकी के दो सिद्धान्त टिके हैं।

बच्चे प्रश्नों के बारे में काफी देर तक सोच-विचार करते रहे। आपस में हल



खोजने का बहुत यत्न करते रहे। परन्तु सही जवाब खोजने में उन्हें असफलता ही हाथ लगी।

गुरू जी ने तीन तक गिनती गिनी पर बेकार। गुरूजी बहुत उदास हो गये। तभी गोविंद जैसे उछलकर खड़ा हो गया। बोला—गुरू जी मुझे जवाब सूझ गया है। यदि आप आज्ञा प्रदान करें तो मैं अपना हल कक्षा के समक्ष रखूँ।

गुरू जी के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान उभर आई। उन्हें गोविन्द पर पूरा विश्वास था। गोविन्द उनकी कक्षा का सबसे होशियार विद्यार्थी था।

गोविन्द ने प्रारम्भ किया— गाँधी जी का पहला सिद्धान्त है—बुरा मत बोलो।

जब हम किसी से बुरा नहीं बोलेंगे तो हमें बुरा सुनने में भी नहीं आएगा। कोई हमसे अनाप-शनाप बोलेगा क्यों? सामने वाले के सींग थोड़े ही लगे होते हैं। फिर सींग वाले जानवर भी बिना किसी छेड़छाड़ के उपद्रव नहीं करते हैं।

—शाबाश! गोविन्द, बिल्कुल ठीक हो तुम। बुरी-भली हमारी जीभ ही होती है। यदि हम इससे मीठा बोलेंगे तो सब मीठा होगा। ''सत्यं-शिवम्-सुंदरम'' होगा। कड़ुवापन हमारे भीतर प्रवेश ही नहीं कर पायेगा। गाँधी जी की मृदु भाषा और विनम्रता जग प्रसिद्ध हुई है।

— जी गुरूजी! इसी तरह बुराई भी देखने-सुनने में नहीं आयेगी—गोविन्द ने अपनी बात पूरी की।

बिल्कुल ठीक! सब कुछ अपने बोलने पर ही निर्भर करता है। पपीहा मीठा बोलता है तो कितना भला प्रतीत होता है।

कोयल भी कानों में रस घोलती प्रतीत होती है। जिस किसी ने भी मीठा बोला वह अपने जीवन में सफल जरूर हुआ है।

ठीक है बच्चो, मीठा बोलना ही वास्तविक आधार है। ठीक सुनने और सुन्दर देखने का।

अब सभी विद्यार्थी अपने-अपने बस्ते बाँध लें और खुशी-खुशी घर जायें। आज का पाठ पढ़ाया जा चुका है।

गुरूजी के आदेश पर बच्चे अपने-अपने घर जाने के लिये तैयार हो गये। वे सब बातें कर रहे थे कि सचमुच मीठा बोलना जीवन में कितना महत्वपूर्ण है।

बापूजी के तीन बंदर कमाल का सबक सिखाते हैं। समूची दुनिया का काम वास्तव में इन सिद्धान्तों के बगैर चल ही नहीं सकता है। ●

कविता : राम सागर 'सदन'

गुलाब

लगता सबको भला गुलाब
काँटों में भी पला गुलाब।
घोर जंगलों में खुल खिलकर
नहीं किसीस को खला गुलाब।

सुख-दुःख दोनों में मुस्कराकर
खुशी लुटाता चला गुलाब।
मंद हवा की थपकी पाकर
बन जाता चुलबुला गुलाब।

होड़ लगा फूलों से मन में
कभी न पल भर जला गुलाब।
शैतानों को तो सस्ते में,
देता है तिलमिला गुलाब।



बाल कविता : दिनेश दर्पण

कोयल

गीत सुहाने गाती कोयल
सबके मन को भाती कोयल
बाग-बाग की डाल-डाल पर
स्वर लहरी गुंजाती कोयल।
कागा सा ही रूप है लेकिन
मीठे बोल सुनाती कोयल।
मिश्री खाकर मीठा बोल
यही बात सिखाती कोयल।



कभी न भूलो

संग्रहकर्ता: चित्रमाला (खलीलाबाद), गुरचरण सिंह (बादलगढ़)

❖ इन्सान की पूजा ही भगवान की पूजा है।

—निरंकारी बाबा

❖ जिसके पास धैर्य है उसके पास सब कुछ है।

—फ्रैंकलिन

❖ इन्सान की सेवा भगवान की सेवा है।

—विनोबा भावे

❖ महान व्यक्ति का पहला लक्षण नम्रता है।

—रस्किन

❖ नम्रता, प्रेमपूर्ण व्यवहार तथा सहनशीलता से मनुष्य तो क्या देवता भी इन्सान के वश में हो जाते हैं।

— बाल गंगाधर तिलक

❖ ईश्वर की निगाह में हम सभी बराबर हैं।

— सन्त रविदास

❖ दूसरे के दुःख को अपना दुःख समझकर दूर करना चाहिये।

—महात्मा बुद्ध

❖ ऊँच नीच, जाति-पांति के भेदभाव व्यर्थ हैं। मनुष्य जन्म से नहीं कर्म तथा आचरण से महान बनता है।

—महावीर स्वामी

❖ सच्चा धर्म वह है जो लोगों में एकता बढ़ाये उनमें फूट न डालें।

—मौलाना अबुल कलाम आजाद

❖ अच्छी सलाह से बढ़कर कोई देन नहीं।

—इरासमस

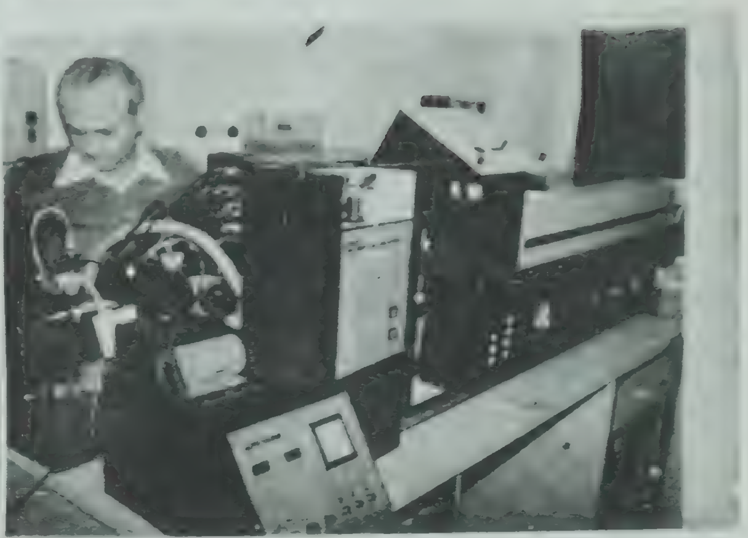
❖ जो जल्दी किये जाने वाले कार्य को देर से करता है वह मूर्ख है।

—विस्मार्क

❖ मेरा दृढ़ विश्वास है कि चिन्ता जीवन की घोर दुश्मन है।

—शेक्सपियर।

सेल सलेक्टर



एक छोटे से बीज में वे सभी गुण विद्यमान होते हैं जो उसके वृक्ष में होते हैं; किन्तु इसकी संरचना इतनी जटिल होती है कि इसे अभी तक पूरी तरह से समझा नहीं जा सका है। इसी प्रकार की स्थिति कोशिका (**Cell**) की होती है। मानव तथा अन्य जीव-जन्तुओं का शरीर छोटी-छोटी असंख्य कोशिकाओं से मिलकर बना होता है। प्रत्येक जीव की कोशिका की संरचना एक दूसरे से भिन्न होती है। आधुनिक वैज्ञानिक कोशिका संरचना के अध्ययन पर विशेष बल दे रहे हैं। उन्हें विश्वास है कि कोशिकाओं के संरचना सम्बन्धी अध्ययन से अनेक ऐसे तथ्यों का पता लगाना सम्भव हो जायेगा जो विभिन्न प्रकार के जटिल रोगों को दूर करने में सहयोगी सिद्ध हो सकते हैं। इस प्रकार एक नये विज्ञान का जन्म हुआ है जिसे साइटोफ्लू ओरोमेट्री (**Cytofluorometry**) का नाम दिया गया है।

साइटोफ्लू ओरोमेट्री एक नया विज्ञान है। इसके अन्तर्गत कोशिकाओं के चुनाव उनके पृथक्करण तथा प्रत्येक कोशिका के अलग-अलग अध्ययन को सम्मिलित किया गया है। इनमें से सर्वाधिक जटिल कार्य कोशिकाओं के चुनाव का है। विश्व के अनेक देशों के वैज्ञानिक लम्बे समय से एक ऐसे यंत्र के निर्माण में लगे हुए थे, जो कोशिकाओं के चुनाव को सरल बना सके। इस दिशा में पहली सफलता फ्रान्स के वैज्ञानिकों को मिली है।

फ्रान्स के फ्रेन्च मेडिकल एण्ड 'बायो लाजिकल इंजीनियर्स' नामक एक शोध संस्थान के वैज्ञानिकों ने 'सेल सलेक्टर' नामक एक ऐसे यंत्र का आविष्कार करने

में सफलता प्राप्त की है, जो अध्ययन के योग्य कोशिकाओं का चुनाव करने के साथ ही साथ उनका विभेदीकरण करके विश्लेषण भी करता है। यह एक सैकेन्ड में दस हजार कोशिकाओं का चुनाव करने की क्षमता रखता है।

सैल सलैक्टर में अध्ययन के लिए जिन कोशिकाओं का चुनाव किया जाता है उन्हें मानव के बाल के बराबर पतली परखनलियों में एक-एक करके एक विशेष प्रकार के तरल पदार्थ के साथ डाला जाता है। इसके बाद इन पर लेसर किरणों की बौछार की जाती है। अन्त में विशिष्ट प्रकार के इलैक्ट्रान माइक्रोस्कोप व कम्प्यूटर की सहायता से इनका अध्ययन किया जाता है।

'सैल सलैक्टर' की सहायता से मानव तथा जीव जन्तुओं की ही नहीं बल्कि विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों का भी अध्ययन किया जा सकता है। फ्रान्सीसी वैज्ञानिकों का दावा है कि 'सैल सलैक्टर' की सहायता से किये गये कोशिका सम्बन्धी अध्ययन से शीघ्र ही विश्व को चकित करने वाले क्रान्तिकारी परिणाम सामने आयेंगे। ●

अमृत वचन

संकलन : जोगेन्द्र पाल निरंकारी

❖ नम्रता की ऊँचाई का कोई नाप नहीं है।

— विनोबा भावे

❖ यात्रा में सत्संगति मार्ग को छोटा बना देती है।

— कबीर

❖ लज्जा, सुन्दरता और सद्‌गुणशीलता का किला है।

— डिमेड्स

❖ बड़ा वही है जिसका चरित्र महान होता है।

— स्वामी विवेकानन्द

❖ अकेला चाँद सम्पूर्ण अन्धेरे को नष्ट कर देता है।

— भर्तृहरि

दादा के उत्तर

— श्याम कुकरेजा (दोंडाईचा)

प्रश्न : इन्सान को अपनी गलती का अहसास कब होता है?

उत्तर : जब उसका परिणाम सामने आता है।

— के. के. नागपाल (खंडवा)

प्रश्न : उपदेश देने वाले स्वयं भी उस पर अमल करें तो?

उत्तर : उपदेश सार्थक हो जाता है।

— सुरेश खुराना (जींद)

प्रश्न : दुनिया में सबसे बड़ा सुख कौन-सा होता है?

उत्तर : सन्तोष।

प्रश्न : 'जय जवान जय किसान' उद्घोष में किसान को जवान के बराबर क्यों रखा गया है?

उत्तर : क्योंकि दोनों ही समान रूप में देश के रक्षक होते हैं।

— स्मिता खत्री (गोंदिया)

प्रश्न : दादा जी, अगर हमें कुछ पाना हो मगर उसका साधन नामुमकिन हो तो हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर : किसी जानकार से सही मार्ग पूछना चाहिए।

प्रश्न : जब किसी इंसान की मृत्यु होती है तो लोग कहते हैं इसके प्राण निकल गये। यह प्राण क्या है ऐसी कौन सी वस्तु है जो एक बार शरीर से निकल जाने के बाद दोबारा वापस नहीं आती और यह हमें दिखाई क्यों नहीं देती?

उत्तर : संत निरंकारी सत्संग में जाया करें, इसका उत्तर मिल जाएगा।

प्रश्न : जब अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता तो फिर एक मछली पूरे तालाब को गंदा कैसे कर सकती है?

उत्तर : इसलिए कि चना जड़ है और मछली चेतन।

— राम कुमार मेश्राम (बीरुटोला)

प्रश्न : समझदार लोग कहते हैं कर्म करते जाओ फल की चिन्ता न करो, इसे अपनी वाणी में समझाएं?

उत्तर : कर्म आज होता है, फल कल मिलता है। महात्मा समझाते हैं कि कल की चिन्ता में आज को व्यर्थ न गंवाओ। आज तुम्हारे पास है कल की भगवान जाने ...

प्रश्न : सत्यवादी ईमानदार व्यक्ति को ही दुःख के दिन देखने को मिलते हैं ऐसा क्यों?

उत्तर : सत्य पर विश्वास लाने के लिए कि क्या झूठे संसार में सत्य हो सकता है।

— अनुज खुराना (जींद)

प्रश्न : क्या कभी झूठ सच की जगह ले सकता है?

उत्तर : कभी नहीं।

— जितेन्द्र कुमार. (पीलीबंगा)

प्रश्न : मुझे गुस्सा बहुत आता है मैंने इसे कम करने के काफी प्रयास किए पर सफलता नहीं मिली?

उत्तर : जब गुस्सा आए तो थोड़ी देर के लिए वह स्थान छोड़ दिया करें। भले आदमी का संग करें।

प्रश्न : मनुष्य अपने दुःखों को किस तरह भुला सकता है?

उत्तर : अपने सुख याद करके।

प्रश्न : इंसान की जिंदगी का मकसद क्या है?

उत्तर : आत्मबोध।

प्रश्न : कभी-कभी कोई अच्छा काम करने पर भी नेकी क्यों नहीं मिलती?

उत्तर : 'हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश विधि हाथ'।

कमल नागपाल (खंडवा)

प्रश्न : क्या अभिमानी व्यक्ति को इस बात का आभास नहीं हो पाता कि वह अभिमान की आग में तप रहा है?

उत्तर : उसे भ्रम होता है कि मैं तो सोना हूँ तप कर और निखर जाऊँगा।

प्रश्न : कई बार स्वयं को सन्त कहलाने वाले लोग मनमती करते हैं दूसरों की खुशी को न समझते हुए अपनी खुशी को ही महत्व देते हैं। ऐसा क्यों?

उत्तर : क्योंकि वह सन्त नहीं होते, केवल सन्त का नाटक कर रहे होते हैं।

पक्षियों का विचित्र संसार

प्रस्तुति : अभिनंदन



1. पहाड़ी मैना

मैना की सभी जातियों में पहाड़ी मैना आकार की दृष्टि से सबसे बड़ी होती है। इसके शरीर तथा पंजों का रंग चमकीला और गहरा काला होता है, किन्तु इसको आँखों के चारों ओर तथा आँखों से सर के पिछले भाग तक पीले रंग की पट्टियाँ होती हैं। पहाड़ी मैना हमेशा जोड़े में अथवा झुण्ड में रहना पसंद करती है। यह भारत में अल्मोड़ा से आसाम तक, हिमालय के 2500 फुट की ऊँचाई तक पर्वतीय जंगलों में, छोटा नागपुर, दक्षिणी पूर्वी मध्य प्रदेश, उड़ीसा तथा पश्चिमी घाट के उत्तर से बम्बई तक पाई जाती है। इसकी कुछ उपजातियाँ अंडमान निकोबार द्वीप समूह, बर्मा तथा श्रीलंका में भी पाई जाती हैं। पहाड़ी मैना एक शाकाहारी पक्षी है। इसे वृक्षों पर रहना और विभिन्न प्रकार के जंगली फल और अंजीर आदि खाना बहुत अच्छा लगता है। यह शाम के समय किसी सूखे पेड़ की ऊँची डाली पर बैठकर अकसर जोर-जोर से चिल्लाती रहती है। पहाड़ी मैना दूसरे पक्षियों की आवाजों की नकल बड़ी कुशलता से कर लेती हैं। इसकी आवाज से कभी-कभी लोग भ्रमित हो जाते हैं। इसका प्रजनन काल मार्च से अक्टूबर तक होता है। इस मध्य नर-मादा दोनों मिलकर किसी वृक्ष के खोखले भाग में घास-फूस तिनकों तथा पक्षियों के पंखों से घोसला बनाते हैं। इसी घोंसले में मादा एक बार में दो या तीन गहरे नीले रंग के अण्डे देती हैं। इन पर भूरे या चाकलेटी रंग की चितियाँ होती हैं।

2. जंगली मैना



जंगली मैना का आकार सामान्य देशी मैना के बराबर होता है। रूप रंग भी सामान्य मैना जैसा ही होता है, किन्तु यह गाँवों तथा बस्तियों से दूर जंगलों गें ही रहना पसन्द करती है। भारत में जंगली मैना लगभग सभी स्थानों पर पाई जाती है। इसकी कुछ उपजातियाँ पाकिस्तान, बर्मा, श्रीलंका, बंगलदेश, चीन तथा मलेशिया में भी पाई जाती हैं। देशी मैना के समान जंगली मैना भी जोड़ों में या झुंड के साथ रहती है तथा फल-फूल जंगली अंजीर व कीड़े-मकोड़े खाती है। इसकी आवाज मैना के समान मधुर स्वर में नहीं गाती और न ही मानव की आवाज की नकल कर पाती है। जंगली मैना का प्रजनन काल फरवरी से जुलाई तक होता है। यह पुरानी इमारतों, वृक्षों के कोटरों या कठफोड़के द्वारा बनाए गए छेदों में देशी मैना के समान ही घास-फूस, तिनकों तथा रेसों आदि से घोंसला बनाती है। मादा जंगली मैना इसी घोंसले में एक बार में तीन या चार अंडे देती हैं। इसके अंडे फिरोजी रंग के होते हैं।

3. भारतीय मैना (देशी मैना)

देशी मैना आकार में बुलबुल से कुछ बड़ी होती है। इसके शरीर का रंग गहरा भूरा तथा चोंच चमकीले पीले रंग की होती है। देशी मैना की आँखों के चारों ओर का भाग भी पीला होता है। इसके पंखों के दोनों तरफ सफेद निशान होते हैं जो उड़ते समय स्पष्ट दिखाई देते हैं। देशी मैना गाँवों तथा बस्तियों के

आस पास जोड़ों में या छोटे-छोटे झुण्ड में रहना पसन्द करती हैं। यह भारत में प्रायः सभी स्थानों पर पाई जाती हैं। देशी मैना फल-फूल, जूठन, कीड़े-मकोड़े सभी खाती हैं। केंचुए तथा



टिड्डे इसका प्रिय भोजन है। किसान जब खेतों में हल चलाते हैं तो यह उनके पीछे-पीछे रहती हैं और जैसे ही भूमि के भीतर से कोई कीड़ा-मकोड़ा या केंचुआ निकलता है यह उस पर झपट पड़ती हैं। इसकी आवाज बड़ी मधुर होती है तथा यह मानव की आवाज की बहुत अच्छी नकल कर लेती है। यही कारण है कि कुछ लोग इसे पालते भी हैं। इसका प्रजनन काल अप्रैल से अगस्त तक होता है। देशी मैना पुरानी इमारतों तथा वृक्षों के कोटरों में घास फुस तिनकों, रूई तथा रेशों आदि से घोंसला बनाती हैं, इसी घोंसले में नीले रंग के अंडे देती हैं। बच्चों का पोषण नर तथा मादा दोनों मिलकर करते हैं। □

क्या आप जानते हैं?

— संग्रहकर्ता : गुरचरण सिंह (बादलगढ़)

- मनुष्य के बाद सबसे समझदार जीव डालफिन मछली है।
- एक लीटर सिरका गर्मी की अपेक्षा जाड़े में ज्यादा भारी होता है।
- साल में एक बार नर सीप मादा बन सकता है।
- ऊँट की रीढ़ की हड्डी एकदम सीधी होती है।
- घोंघा बिना घायल हुए ब्लेड की धार पर भी चल सकता है।
- सूर्य का 95 प्रतिशत भाग हाईड्रोडन व हीलीयम गैसों से बना है।

वे शीघ्र ही नदी के निकट पहुँच गये। पानी पीने के बाद तरबूज काटने लगे किंतु चाकू में बहुत कम धार होने से तरबूज कट न सका। बड़े भाई ने एक भाई को चाकू पर धार करने, दूसरे को तरबूज पकड़ने का काम सौंपा और स्वयं सबके आराम करने के लिए जमीन साफ करने लगा।

बरगद का पेड़ बहुत पुराना था, उस पर एक भूत रहता था। वह रात भर इधर-उधर घूमता और दिन में पेड़ पर आ जाता और पेड़ पर पड़ा-पड़ा सोता रहता। अंधेरा होते ही फिर उठता और घूमने फिरने निकल जाता। यही उसका नित्य नियम बन गया था।



एक दिन अचानक जमींदार की मृत्यु हो गई। उसके मरते ही तीनों बेटे और भी निरंकुश हो गये। अब वे आपस में दिनभर लड़ते और गाँववालों को भी अधिक सताते। एक दिन रामधन के बेटों को भी जरा सी बात पर उन्होंने मारा-पीटा और नौकरी से निकाल दिया।

वृद्ध रामधन बहुत दुःखी था। एक माह से उसके जवान लड़के बेरोजगार थे। छोटे पोते-पोतियों का दुःख उससे देखा न जाता। उसके पास जो कुछ भी था वह सब समाप्त हो चुका था।

एक दिन उसने अपने तीनों बेटों को बुलाया और बोला—बेटों एक माह से तुम लोग बेकार हो मेरे पास जो कुछ था मैंने खर्च कर दिया। अब कुछ भी नहीं बचा। तुम्हारे छोटे-छोटे बच्चों का दुःख मुझसे देखा नहीं जाता। तुम लोग जवान हो, मेहनती हो, कुछ काम क्यों नहीं करते?

मगर बापू हम क्या कर सकते हैं? खेती के सिवाय हमें कोई काम नहीं आता और जमीन हमारे पास है नहीं। अब तुम्हीं बताओ हम क्या करें? बड़ा भाई बोला—शेष दोनों भाई आज्ञाकारी सेवकों के समान उसके पीछे चुपचाप खड़े थे।

—ठीक है; एक काम करो। जब तुम्हें इस गाँव में कोई काम धंधा नहीं मिलता

आस पास जोड़ों में या छोटे-छोटे झुण्ड में रहना पसन्द करती हैं। यह भारत में प्रायः सभी स्थानों पर पाई जाती हैं। देशी मैना फल-फूल, जूठन, कीड़े-मकोड़े सभी खाती हैं। केंचुए तथा



टिड्डे इसका प्रिय भोजन है। किसान जब खेतों में हल चलाते हैं तो यह उनके पीछे-पीछे रहती हैं और जैसे ही भूमि के भीतर से कोई कीड़ा-मकोड़ा या केंचुआ निकलता है यह उस पर झपट पड़ती हैं। इसकी आवाज बड़ी मधुर होती है तथा

तो परदेस जाकर कमाओ। बिना कमाये किसी का गुजारा नहीं होता। रामधन ने हृदय पर पत्थर रखकर अपने जवान बेटों को परदेश जाने की आज्ञा दी।

—ठीक है बापू, जैसा आप कहते हो हम वैसा ही करेंगे—कहते हुए बड़े भाई ने अपने दोनों छोटे भाइयों की ओर देखा। वे सिर झुकाये खड़े थे। जैसे कह रहे हों कि बापू की आज्ञा हमें भी स्वीकार है।

अगले दिन तीनों भाई तैयार होकर वृद्ध पिता के पास आ गये। रामधन चारपाई पर बैठा खांस रहा था। तीनों भाइयों ने उसके पैर छुए और कमाने के लिए घर से परदेस जाने के लिये निकल गये। वृद्ध रामधन ने उन्हें बड़े दुःखी मन से विदा किया। उसकी आँखों में आँसू थे। चलते समय उसने पड़ौसी के यहाँ से आया एक तरबूज उनको दे दिया।

तीनों भाई दिन भर चलते रहे। शाम हो गयी। वे थककर चूर हो गये थे, भूख और प्यास भी लगने लगी थी। तभी बड़े भाई की दृष्टि दूर बरगद के एक पेड़ पर गयी। उसके पास ही एक नदी बह रही थी। तीनों भाइयों ने तय किया कि वे नदी का पानी पीकर, अपने साथ लाये तरबूज को खा लेंगे और बरगद के नीचे रात भर आराम करके दूसरे दिन फिर यात्रा आरंभ करेंगे।

वे शीघ्र ही नदी के निकट पहुँच गये। पानी पीने के बाद तरबूज काटने लगे किंतु चाकू में बहुत कम धार होने से तरबूज कट न सका। बड़े भाई ने एक भाई को चाकू पर धार करने, दूसरे को तरबूज पकड़ने का काम सौंपा और स्वयं सबके आराम करने के लिए जमीन साफ करने लगा।

बरगद का पेड़ बहुत पुराना था, उस पर एक भूत रहता था। वह रात भर इधर-उधर घूमता और दिन में पेड़ पर आ जाता और पेड़ पर पड़ा-पड़ा सोता रहता। अंधेरा होते ही फिर उठता और घूमने फिरने निकल जाता। यही उसका नित्य नियम बन गया था।



अभी अंधेरा होने में देर थी, लेकिन पेड़ के नीचे की आवाज़ सुनकर भूत की नींद खुल गई। कुछ देर तक वह आँखें मलता रहा फिर नीचे देखा तो देखता ही रह गया। बरगद के पेड़ के ठीक नीचे तीन हृष्ट-पुष्ट युवक खड़े थे। उनमें से एक के पास चाकू था।

भूत घबरा गया। उसने सोचा शायद ये मेरी चोटी काटना चाहते हैं। भागने का भी कोई रास्ता नहीं है चलो नीचे चलकर देखा जाये कि ये लोग कौन हैं और क्या करने आये हैं?

डरते-डरते भूत नीचे उतरा।

—तुम लोग कौन हो और यहाँ क्या करने आये हो? भूत की आवाज में घबराहट थी। अचानक एक अजनबी को अपने सामने पाकर तीनों भाई डर गये, लेकिन बड़े भाई ने हिम्मत की। दोनों छोटे भाई अपनी आदत के अनुसार बड़े भाई के पीछे हिम्मत बांधकर खड़े हो गये।

—पहले तुम बताओ कि तुम कौन हो? बड़े भाई ने हिम्मत करके अपनी आवाज को कठोर बनाते हुए पूछा।

—मैं भूत हूँ। इसी बरगद पर रहता हूँ। अगर मुझसे कोई गलती हो गयी हो तो माफ कर दो भाई—भूत ने अत्यंत दयनीय स्वर में कहा।

बड़े भाई की कड़क आवाज सुनकर वह समझ गया कि अवश्य कोई खतरा है। इसके साथ ही दोनों भाई इस प्रकार खड़े हो गये कि भूत को दाल में कुछ काला नजर आने लगा।

भूत का नाम सुनते ही तीनों भाइयों के होश उड़ गये। लेकिन भूत की बात सुनकर वे समझ गये कि वह उनसे डर रहा है। शीघ्र ही बड़े भाई ने अपनी घबराहट पर काबू पा लिया और फिर अपनी आवाज को और अधिक कठोर बनाते हुए बोला—अच्छा तो तुम्हीं हो बरगद वाले भूत जिसकी चोटी काटने के लिए हमारे गाँव के तांत्रिक ने हमें चाकू और कुछ मंत्र बताकर भेजा है। कहते हैं भूत की जान उसकी चोटी में होती है। इसीलिए भूत चोटी के कटने से डर रहा था।

हाँ महाराज, मैं ही वह बरगद वाला ... भूत की आवाज चोटी के काटे जाने के डर से निकल नहीं रही थी।

फिर बड़ा भाई मंत्र पढ़ने का नाटक करते हुए बोला—लाओ चाकू मुझे दो, मैं अभी चोटी काटता हूँ। बड़े भाई ने छोटे भाई की तरफ चाकू लेने के लिए हाथ बढ़ाया।

वह सोच रहा था कि चोटी काटने के डर से भूत भाग जायेगा और हम इस मुसीबत से बच जायेंगे।

—नहीं महाराज, मेरी चोटी मत काटो, मैं तुम्हें धनवान बना दूँगा, लेकिन मेरी चोटी मत काटो। भूत गिड़गिड़ाने लगा।

बड़े भाई के हाथ में चाकू देख उसका दम निकला जा रहा था।

अगर तुम हमें खुश कर दो तो हम तुम्हारी चोटी नहीं काटेंगे।—बड़े भाई का स्वर थोड़ा नरम हो गया था।

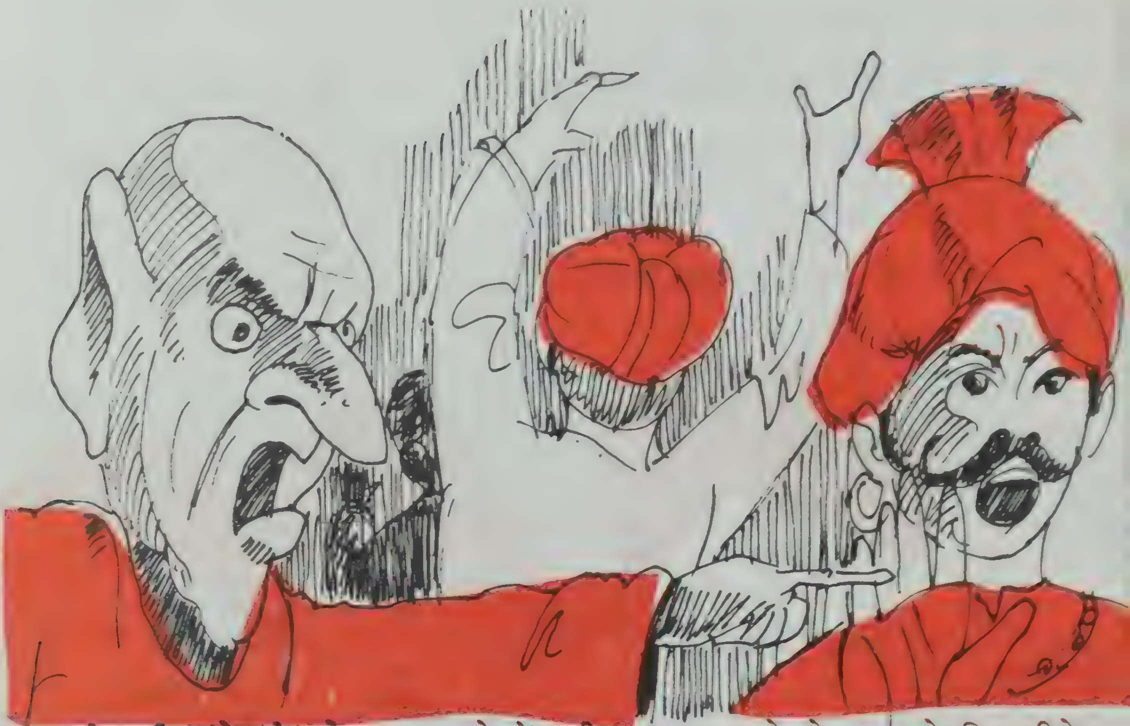
भूत उन्हें एक गुफा में ले गया। जिसमें सोने, चाँदी, हीरे, जवाहरातों के ढेर लगे थे। तीनों भाइयों ने एक गठरी बाँधी और भूत को धन्यवाद देते हुए अपने गाँव आ गये।

अब वे बड़े आराम से रहने लगे थे। उनके पास शानदार भवन व ऐशो-आराम के सभी साधन हो गये थे।



धीरे-धीरे यह बात तीनों जमींदार के लड़कों ने भी सुनी। वे निर्धन रामधन के धनी होने का राज जानने के लिए उनके पास पहुँचे। वृद्ध रामधन ने उन्हें पूरी बात बता दी।

अगले दिन ही जमींदार के तीनों बेटे भी जंगल की ओर चल दिये। शाम तक वे उसी बरगद के पेड़ के नीचे पहुँच गये। तीनों का भूख, प्यास और थकान से बुरा हाल था। अंधेरा होने लगा था। तभी बड़े भाई ने तरबूज काट लिया। वह तरबूज की फाँके काटकर देने लगा। किंतु अंधेरे के कारण किसी भाई को कम और किसी को ज्यादा तरबूज जाने से वे लड़ पड़े। लड़ाई में उनका चाकू भी



वहीं कहीं अंधेर में खो गया। इतने में वही भूत बरगद के पेड़ पर से फिर नीचे उतरा। उन तीनों भाइयों को अलग-अलग देखकर वह भूत उन पर हावी हो गया। उसने कड़ककर कहा—तुम कौन हो?

तीनों भाइयों ने कहा—हम भूत के बाप हैं। तुझे मजा चखायेंगे। भूत ने उनसे भी कड़कती आवाज़ में कहा—तुम तो पहले ही आपस में लड़ रहे हो; लड़ते-लड़ते तुमने अपना हथियार (चाकू) भी खो दिया है। तुम मुझे क्या मजा चखाओगे? तुम उन तीन भाइयों का मुकाबला नहीं कर सकते। उनमें एकता है वे ईमानदार हैं अपने हाथों से मेहनत करना जानते हैं। वे स्वार्थी भी नहीं हैं। उन्होंने अपने पिता की आज्ञा का पालन भी किया है। उनकी इसी ताकत के कारण मुझे उनकी सहायता करनी पड़ी। मगर तुम! तुम्हें तो फूटी कौड़ी भी नहीं मिलेगी। यह कहकर भूत ने उन तीनों को मार-मारकर अधमरा कर दिया। उनके कपड़े फाड़ दिये। वे हताश होकर अपने घर पर वापस लौट आये।

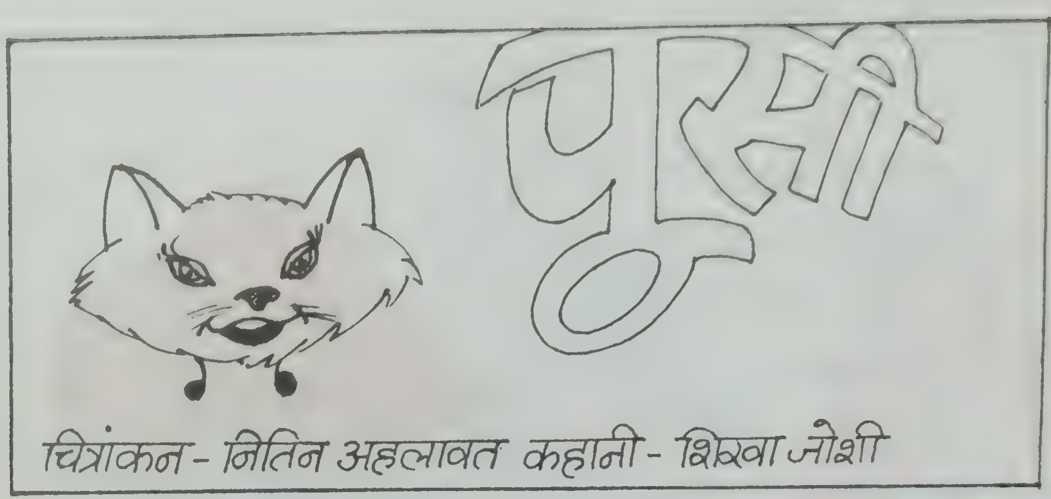
—वास्तव में; शुद्ध कर्मशील, प्रभु भक्त लोग किसी न किसी बहाने से प्रभु के आशीर्वाद के भागीदार बन जाते हैं। ●

कविता: डा. हरिसिंह 'हरीश'

चूहा

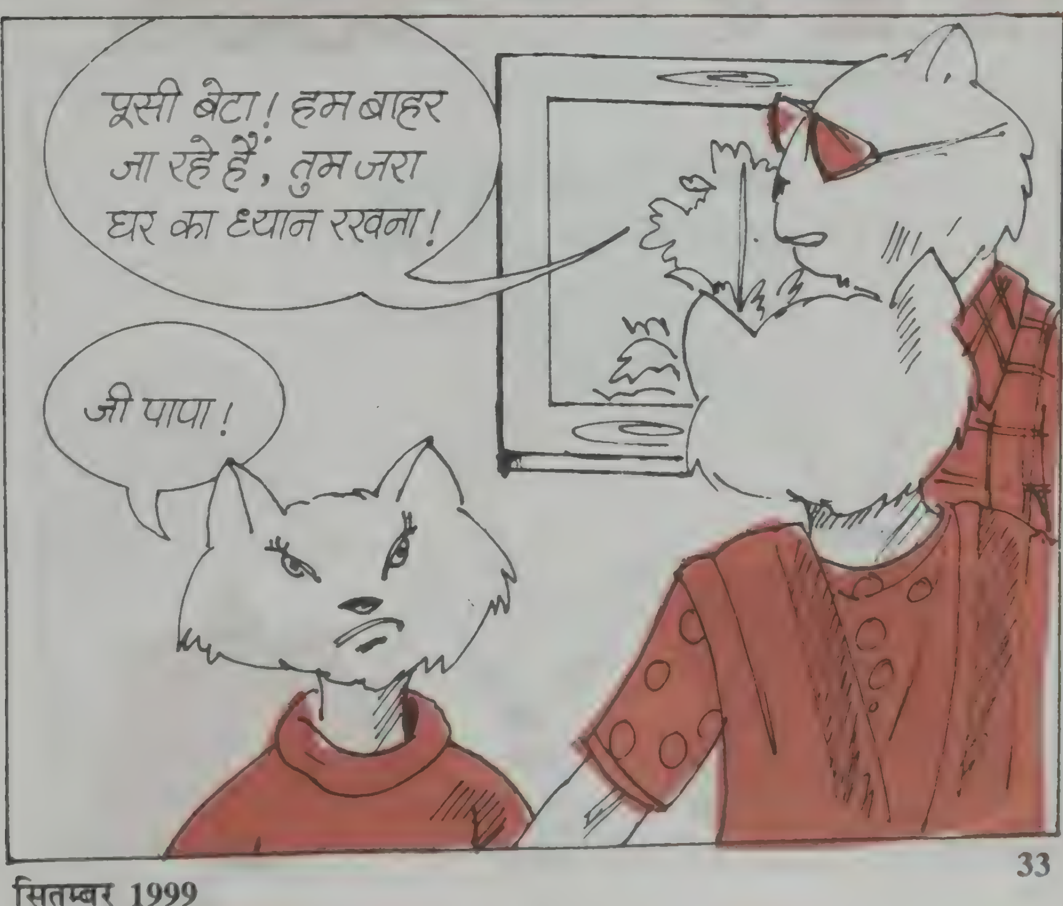
चूहा कपड़ा काट रहा है।
दर्जी जैसा छाँट रहा है।
पूड़ी, हलवा और मिठाई,
खूब मजे से चाट रहा है।
कभी यहाँ पर, कभी वहाँ पर,
कभी देखिये हाट रहा है।
खुद तो खाता ही है लेकिन
और सभी को बाँट रहा है।
भर-भर कर यह पेट बाप रे,
सबकी मेहनत पाट रहा है।

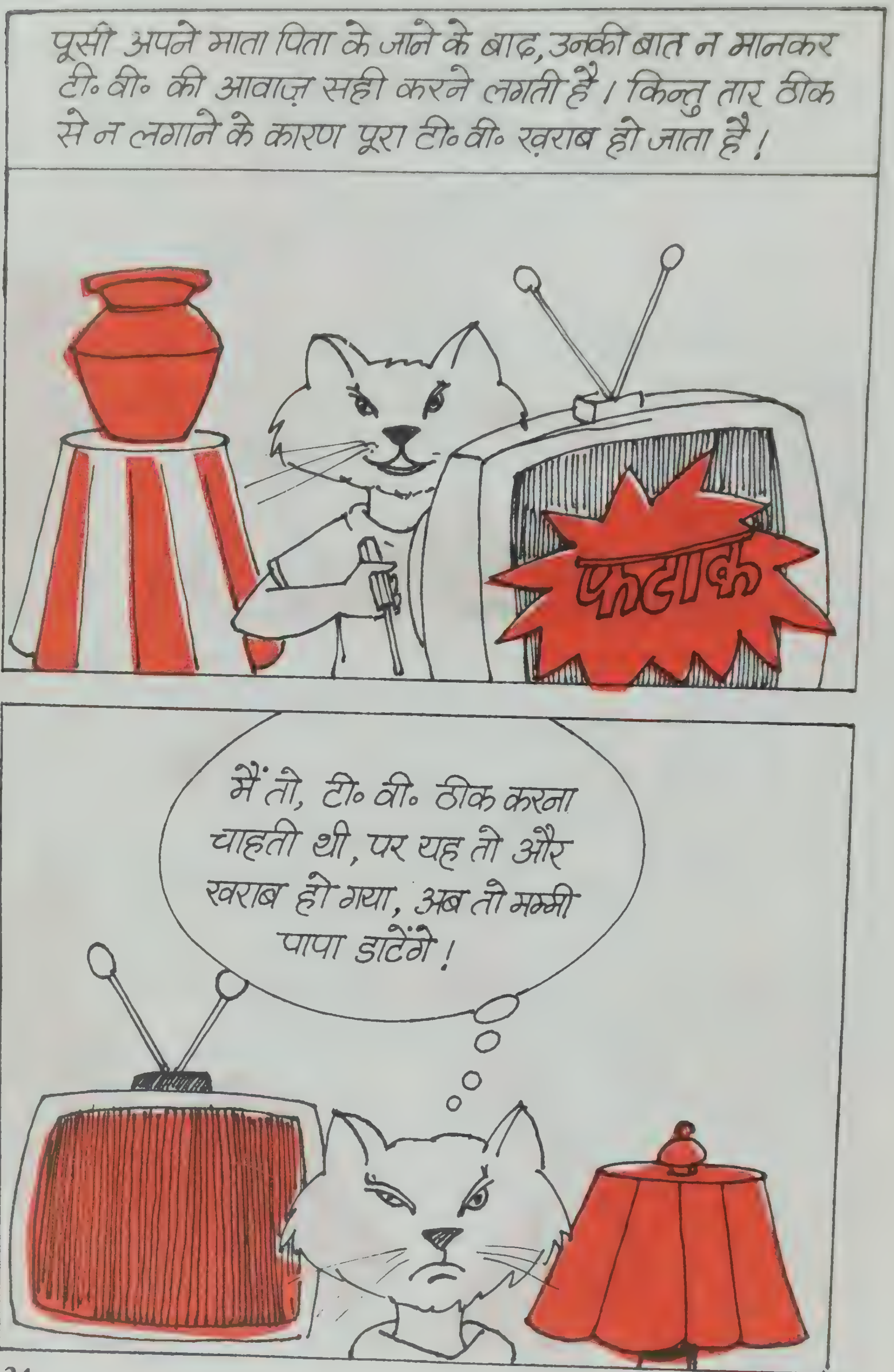



पुसी
चित्रांकन - नितिन अहलावत कहानी - शिखा जोशी


मम्मी... पापा मैंने टी॰ वी॰ पर कार्यक्रम में टी॰ वी॰ ठीक करना सीख लिया है क्या मैं अपने टी॰ वी॰ की आवाज़ ठीक कर दूँ!


नहीं पूसी बेटा बिना अभ्यास के कोई भी काम नहीं करना चाहिए!


पूसी बेटा! हम बाहर जा रहे हैं, तुम जरा घर का ध्यान रखना!
जी पापा!


पूसी अपने माता पिता के जाने के बाद, उनकी बात न मानकर टी॰ वी॰ की आवाज़ सही करने लगती है। किन्तु तार ठीक से न लगाने के कारण पूरा टी॰ वी॰ ख़राब हो जाता है।
फटाक
मैं तो, टी॰ वी॰ ठीक करना चाहती थी, पर यह तो और खराब हो गया, अब तो मम्मी पापा डाटेंगे!


देखा?... पूसी हमने तुम्हें पहले ही समझाया था कि बिना अनुभव के कोई काम नहीं करना चाहिए तुमने एक बार फिर गल्ती की!


आज मुझे पता चला कि बिना अभ्यास के कोई काम करने से क्या होता है!

कहानी : किशोर डैनियल

उड़न खटोला



एक समय की बात है। एक गाँव में रामू नाम का एक आदमी रहता था। वह बहुत चतुर था। गाँव के सभी बच्चे उसे रामू काका के नाम से पुकारते थे। वह काम-काज तो करता नहीं था परन्तु हर समय बच्चे उसके डेरे पर जमा हो जाते और वह उन्हें कहानियाँ सुनाया करता। इसीलिए वह बच्चों में लोकप्रिय बन गया था।

अनेक जगह रामू काका ने नौकरी की खोज की परन्तु पढ़े-लिखे न होने के कारण उन्हें कहीं भी नौकरी न मिली। अन्त में उसने यही उचित समझा कि वह गाँव छोड़कर कहीं चला जाए।

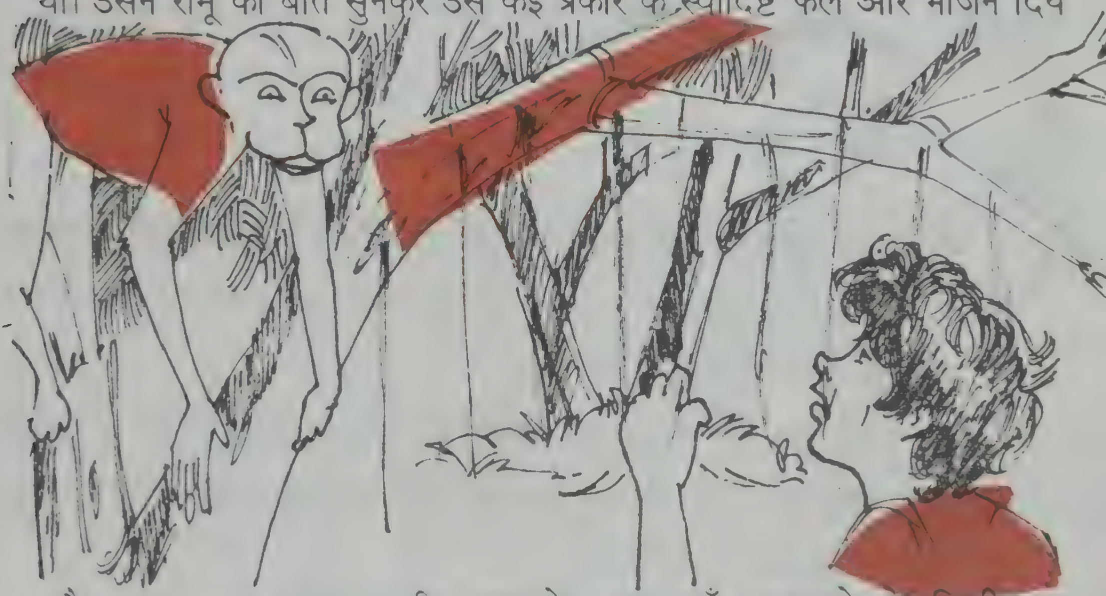
एक दिन वह काम की तलाश में चल पड़ा। बहुत दूर निकल गया। चलते-चलते शाम होने लगी थी। वह बहुत थक भी गया था। भूख और प्यास भी उसे अब खूब सताने लगी थी। काफी दूर जाने के बाद उसने एक घने व छायादार वृक्ष को देखा। उसी के निकट एक झरना बह रहा था। अपनी प्यास मिटाने के लिए उसने वह जल पिया और फिर वृक्ष के नीचे विश्राम करने लगा।

संयोग से उस विशाल बरगद के वृक्ष पर एक बंदर रहता था। यह बंदर एक देवता का पुजारी था। जो देवलोक में रहता था। इसीलिए भोर होने से पहले वह अपने उड़न खटोले पर बैठकर अपने देवता के दर्शन तथा उनकी सेवा करने के लिए वहाँ पहुँच जाता था और संध्या को अपने डेरे पर लौट आता था।

अचानक उसने रामू को देखा। वह उसके निकट आया और बोला—श्रीमान आप कौन हैं और कहाँ की यात्रा पर निकले हैं?

यह सुन रामू ने अपने विषय में उस बन्दर को सब कुछ बता दिया।

वह बन्दर दयालु था और भलाई के काम करना वह अपना कर्तव्य समझता था। उसने रामू की बाते सुनकर उसे कई प्रकार के स्वादिष्ट फल और भोजन दिये



और कहा—जब तक आपकी इच्छा हो, आप यहाँ रह सकते हो। किसी बात की चिन्ता मत करना। इस प्रकार कई दिन व्यतीत होते चले गए।

रामू और बन्दर की दोस्ती काफी पक्की हो गई थी। खूब प्यार के साथ रहते। और एक दूसरे की काम में मदद करते थे।

एक दिन जब रामू नगर से अपने डेरे पर लौट रहा था। उसने देखा कि एक आदमी ने पहले नगाड़ा पीटा और फिर ऊँची आवाज में बोला—हे नगर वासियों! हमारे राजा की ओर से यह ऐलान किया जाता है कि जो कोई उस आदमखोर सिंह को मारकर लायेगा। उसी वीर के साथ राजा अपनी पुत्री का विवाह करेगा तथा राज्य का आधा हिस्सा भी उसे पुरस्कार रूप में भेंट किया जायेगा।



यह ऐलान सुनते ही उस राजकुमारी को प्राप्त करने की लालसा से दूर-दूर से राजकुमार तथा अनेक वीरों ने अपना-अपना भाग्य अजमाया। परन्तु राजा की इस शर्त को कोई भी पूरा न कर पाया।

रामू ने भी उस शेर को मारकर उस राजकुमारी से विवाह करने की इच्छा प्रकट हुई परन्तु वह राजा की इस शर्त को कैसे पूरा करे? यही सोच-सोचकर कई दिन व्यतीत होते चले गए।

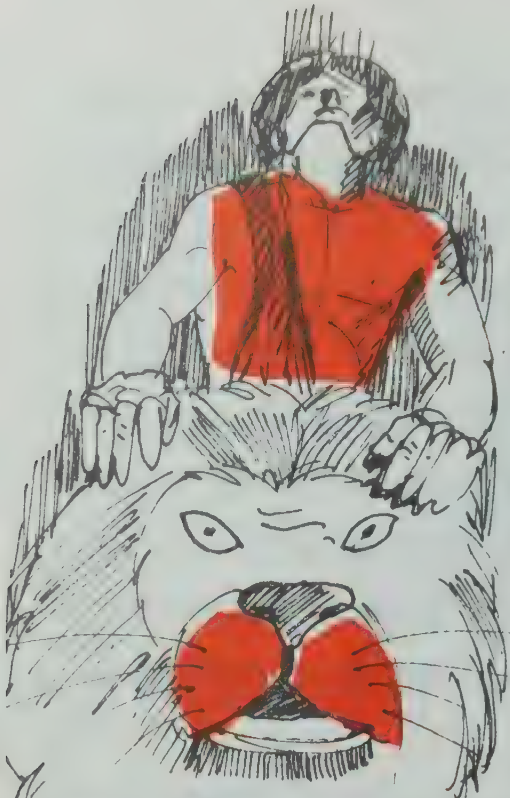
एक दिन रामू नें अपने मित्र उस बन्दर से कहा—आज मुझे भी अपने साथ ले चलो। बन्दर ने उसकी प्रार्थना स्वीकार करके उड़न खटोले में उसे बैठ जाने की अनुमति प्रदान कर दी। और कुछ ही क्षणों में उनका उड़न खटोला नीले गगन में उड़ने लगा। कुछ ही समय बाद उस परलोक में पहुँच गया जहाँ से वह रामू कभी कल्पना भी नहीं कर सकता था। परलोक में पहुँचते ही दोनों ने देवता को प्रणाम किया और उसकी सेवा में लग गये। इस प्रकार संध्या हो गई बन्दर प्रतिदिन रामू को अपने साथ ले जाया करता था और बड़े आरामपूर्वक ये अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे।

एक दिन रामू ने अपने मन की बात अपने देवता से कहनी चाही परन्तु उसका इतना साहस न हुआ। परन्तु भगवान जानते थे कि उनका सेवक क्या कहना चाहता है। वह धीरे से मुस्काये और फिर शान्त भाव से बोले—हे रामू तुम क्या कहना चाहते हो? तुम मेरे भक्त हो और मेरी उपासना करते हो। मैं तुमसे अत्यन्त प्रसन्न हूँ। इसलिए तुम्हारी भक्ति का फल तुम्हें अवश्य ही मिलेगा। और उन्होंने आश्चर्यजनक अंगूठी उसे भेंट करते हुए कहा—तुम्हें जो भी चाहिए तुम इस अंगूठी को तीन बार यह कहना, चल री अंगूठी अपना कमाल दिखा। फिर गंगाजल में डालकर पहन लेना। उसके बाद तुम जो चाहोगे वह होगा।

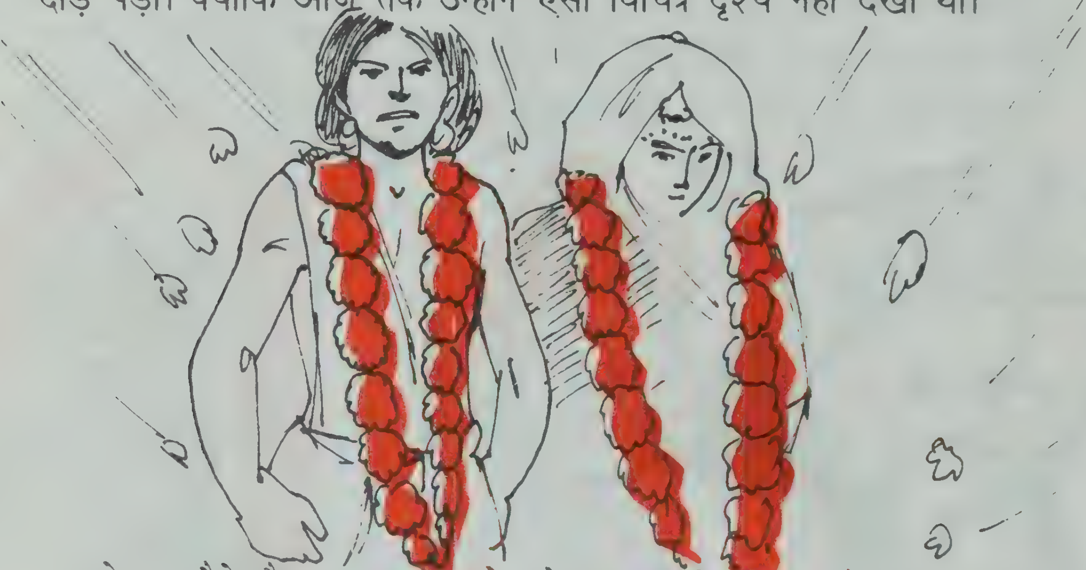
यह सुनकर रामू की आँखों में जैसे जीवन का नया आनन्द फैल गया। और उत्सुक हृदय में हर्ष के हिलोरे उठने लगे। अब सायंकाल का समय हो गया था। दोनों अपने डेरे पर लौट आये।

रामू बहुत प्रसन्न था क्योंकि उसे अपने जीवन में इतना आनन्द कभी प्राप्त नहीं हुआ था। दूसरे दिन प्रातःकाल उठकर उसने अपने गुरुदेव को प्रणाम किया और कहा—हे स्वामी मुझे अपना आशीर्वाद प्रदान कीजिए। और फिर वह उस सिंह की खोज में जंगल की ओर निकल पड़ा। इस समय दोपहरी हो गई थी।





वह आगे ही बढ़ता चला गया। रामू ने वैसा ही किया जैसा उसे कहा गया था। उसने तीन बार कहा—चल री अंगूठी अपना कमाल दिखा। फिर गंगाजल में डालकर उसने उसे पहन ली। अंगूठी पहनते ही शेर उसके निकट आ गया था। परन्तु अब वह एक पालतू कुत्ते के समान दुम हिलाकर अपने मालिक का स्वागत कर रहा था। रामू ने उसके दोनों कान पकड़े और उस पर सवार होकर नगर की ओर चल पड़ा। जैसे ही उसने नगर में प्रवेश किया इस रोमांचकारी दृश्य को देखकर लोगों ने आश्चर्य प्रकट किया। उनके हृदय में अत्यन्त खुशी की लहर दौड़ पड़ी। क्योंकि आज तक उन्होंने ऐसा विचित्र दृश्य नहीं देखा था।



शेर पर बैठे नौजवान का राजा ने बड़े सम्मानपूर्वक किया और बड़ी धूमधाम के साथ अपनी पुत्री का विवाह किया। इस तरह रामू बड़ी सुख-शान्ति के साथ जीवन व्यतीत करने लगा।

— कहानी की सत्यता जो भी रही हो परन्तु यह सत्य है कि कर्मशील व साहसी व्यक्ति को सफलता अवश्य मिलती है। □

डॉ. अंकल के उत्तर

❑ डॉ. कुन्दन कुमार

— अंजु सागर निरंकारी (हसनपुर)

प्रश्न : डॉ. अंकल जी, मेरे सिर में दर्द होता है। मुझे चश्मा भी तीन महीने से लगा हुआ है। कृपया कोई उपाय बताएं?

उत्तर : शुद्ध शहद की एक दो बूँदे आँखों में दिन में दो बार डालें। व बकरी के दूध की एक दो बूँद रात को डालें। शीघ्र ही लाभ होगा।

— पुनीत रानी चौहान (गोखला)

प्रश्न : मेरी उम्र 10 साल है। मेरी दाढ़ टूट कर नई आने लगी है उसमें बहुत दर्द होता है? कृपया कोई सरल उपाय बताएं।

उत्तर : पायोकिल दन्त मंजन से सुबह-शाम गंजन करें। लाभ होगा।

— स्वर्ण कौर (गोखला)

प्रश्न : डॉ. अंकल, मेरी मम्मी की उम्र तकरीबन 40 साल है। उनको रात को नींद नहीं आती व बैचैनी लगी रहती है। कृपया कोई सरल उपाय बताएं।

उत्तर : तुलसी के 3-4 पत्ते सिरहाने रख कर सोयें। नींद आ जायेगी।

— राज जिन्दल (डबवाली)

प्रश्न : मेरी उम्र भी ज्यादा नहीं है। फिर भी कमर बहुत दर्द करती है। कृपया कोई उपाय बताएं।

उत्तर : योगराज गुग्गुल सुबह-शाम लें। तथा सुरजा व मग पीपल बराबर भाग में मिलाकर एक-चौथाई चम्मच सुबह-शाम ले । और नरम-मुलायम व लचकदार बिस्तर पर न सोएं। सोते समय कमर एकदम सीधी रहनी चाहिए।

— लोकेश कुमार (मण्डला)

प्रश्न : मेरे गाल में दर्द होता है। वह ठीक नहीं हो रहा है। कृपया कोई उपाय बताएं।

उत्तर : बोरिक पाउडर, सेंधा नमक तथा फिटकरी बराबर भाग लेकर पीस कर इन्हें आधा चम्मच एक गिलास पानी में उबाल लें। फिर रूई से सेक करें। लाभ होगा।

समाचार

भारत दूसरे नम्बर का गेहूँ उत्पादक देश

केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री सोमपाल शास्त्री के अनुसार भारत में इस वर्ष गेहूँ का 7 करोड़ 30 लाख टन रिकार्ड उत्पादन हुआ है, जिससे भारत विश्व का दूसरे नम्बर का खाद्यान्न उत्पादक देश बन गया है।

भारत कुल गेहूँ उत्पादन एवं प्रति हेक्टेयर गेहूँ उत्पादन के मामले में अमेरिका को पीछे छोड़कर विश्व का दूसरे नम्बर का गेहूँ उत्पादक देश बन गया है।

धरती के लिए काम करने वालों में एक भारतीय

प्रसिद्ध विश्व स्तरीय पत्रिका 'टाइम' ने वाराणसी स्थित एक मन्दिर के पुजारी एवं प्रसिद्ध सिविल इंजीनियर श्री वीरभद्र मिश्र को 'धरती के लिए काम करने वाले सात हीरों में से एक' का खिताब प्रदान किया है।

उन्हें यह सम्मान 'गंगा नदी को प्रदूषण मुक्त कराने के लिए अथक प्रयास' करने के लिए मिला है।

श्री मिश्र एक विश्वविद्यालय के 'सिविल इंजीनियरिंग विभाग' के प्रमुख भी हैं।

विश्वनाथन आनन्द विश्व रेपिड शतरंज रेटिंग में शीर्ष पर

अन्तर्राष्ट्रीय शतरंज संघ (फिडे) द्वारा जारी विश्व शतरंज रेटिंग में विश्वनाथन आनन्द ने 2840 की ऊँची 'इ एल ओ रेटिंग' के साथ नम्बर एक स्थान हासिल किया है।

आनन्द रेपिड शतरंज में 2800 अंकों का जादुई आँकड़ा पार करने विाले पहले खिलाड़ी हैं। रूस के ब्लादिमिर क्रेमनिक दूसरे स्थान पर हैं।

बच्चों ने भेजा जेब खर्च राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में

कारगिल संकट के समय हमारे देशवासियों में देशभक्ति का ज्वार उमड़ पड़ा है। समाज के हर वर्ग के लोग राष्ट्रीय संकट की इस घड़ी में वीर जवानों के साथ खड़े हैं। भारतीय बच्चे भी किसी से पीछे नहीं हैं। उन्होंने विभिन्न संदेश भेजकर जहाँ सीमा पर लड़ रहे जवानों का हौंसला बढ़ाया वहीं कई स्कूलों के बच्चों ने धन एकत्र करके राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में अपना योगदान दिया।

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर पानी पिलाने वाले निर्धन बच्चों ने भी ऊँचे हौंसले का परिचय दिया। उन्होंने अपनी मजदूरी में से धन बचाकर राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में जमा किया।

पूरे देश के स्कूली बच्चों ने विभिन्न पोस्ट कार्डों पर अपने सन्देश लिखे, जिन्हें कारगिल के जवानों तक पहुँचाया गया। सेना के एक अधिकारी के अनुसार इन पत्रों से सीमा पर लड़

रहे सैनिकों का हौसला बढ़ा तथा उन्हें ऐसा लगा, जैसे कारगिल के बाहर कोई उनका इन्तजार कर रहा हो।

इस प्रकार बच्चों ने भी अपनी ऐसी गतिविधियों से अपने हृदय में उमड़ रहे देशभक्ति के ज़ज्बे का परिचय दिया है। बच्चों ने यह सिद्ध कर दिया है कि वर्तमान पीढ़ी को उन पर निःसंकोच विश्वास करना चाहिए।

घुसपैठियों का पता लगाने वाला उपग्रह

कारगिल में पिछले दिनों आ घुसे घुसपैठियों के कारण उत्पन्न युद्ध जैसी भयंकर स्थिति से निबटने के बाद ऐसी परिस्थितियों से भविष्य में निबटने के लिए रक्षा विशेषज्ञों का ध्यान उपग्रह के उपयोग की तरफ गया है। इस हेतु 'कार्टोसैट-एक' नामक उपग्रह ने भारतीय सेना का ध्यान अपनी ओर खींचा है। भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन द्वारा अब तक विकसित किये गये उपग्रहों में से सबसे महंगा उपग्रह मानचित्रों से सम्बन्धित कार्य करता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि इस उपग्रह से प्राप्त चित्र भारतीय सेना के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होंगे। इनके माध्यम से सीमापार करने वाले गुसपैठियों पर निगाह रखी जा सकेगी तथा युद्ध की स्थिति से बचा जा सकेगा।

भारत की ज्योतिर्मय सिकदर 1998 की सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी

बैंकाक एशियाई खेलों में भारत की विजय पताका फहराने वाली खिलाड़ी ज्योतिर्मय सिकदर को, तमिलनाडु के खेल पत्रकार संघ ने 1998 की सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित किया है। एशियाई खेलों में दो स्वर्ण पदक तथा एक रजत पदक जीतने वाली सिकदर को माम भुथैया स्वर्ण पदक दिया जाएगा।

गत वर्ष राष्ट्रकुल खेलों में पदक जीतने वाले खिलाड़ी एस. मुथु को तमिलनाडु का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया है।

पूर्व टेस्ट खिलाड़ी एस. वेंकट राघवन और तैराकी की उभरती प्रतिभा मयूरा कुमार को विशेष पुरस्कार दिये जाएंगे।

सीनियर राष्ट्रीय बेंच प्रैस चैम्पियनशीप

पिछले दिनों क्योंझार (उड़ीसा) में आयोजित राष्ट्रीय बेंच प्रैस चैम्पियनशीप में दिल्ली के युवकों परवीन खन्ना व सुरेन्द्र यादव ने नये कीर्तिमान बनाये।

परवीन खन्ना ने इस प्रतियोगिता में सबसे ज्यादा 215.5 कि. ग्रा. वजन उठाकर 'स्ट्रांग मैन ऑफ इंडिया' का खिताब पाया। उन्होंने यह कीर्तिमान 110 कि. ग्रा. भार वर्ग में बनाया।

60 किलो भार वर्ग में, सुरेन्द्र यादव ने 185.5 कि. ग्रा. वजन उठाकर नया राष्ट्रीय कीर्तिमान बनाया।

— हँसती दुनिया संवाददाता राम कुमार 'सेवक' द्वारा

पढो और हँसों

पुलिस इन्सपैक्टर: (नौजवान गवाह से) जब श्रीमती शबनम अपने पति को पीट रही थी तब तुम कहाँ थे?

नौजवान : मैं वहीं पर था साहब।

पुलिस इन्सपैक्टर: तुम एक मात्र चश्मदीद गवाह होने के नाते इस बारे में क्या कहना चाहोगे?

नौजवान : यही कि मैं कभी शादी नहीं करूँगा।

— संतोष डेंगानी (वडसा)

शिक्षक : (अंग्रेजी विषय पढ़ाते हुए) रामू सप्ताह में कितने 'डे' होते हैं?

रामू : सर सात— संडे, मंडे, ट्यूजडे, वेडनेस डे, थर्सडे, फ्राइडे और सैटरडे।

एक शरारती बच्चा : सर, एक और भी 'डे' है।

शिक्षक : कौन सा?

शरारती बच्चा : होली 'डे'।

— कपिल प्रसाद दास (करहरिया, बोकारो)

एक व्यक्ति : आपका बेटा दाँतों का डॉक्टर कैसे बन गया? आप तो कहते थे कि यह आँखों का डॉक्टर बनेगा।

दूसरा व्यक्ति : उसने सोचा, दाँतों की डॉक्टरी में अधिक कमाई है क्योंकि दाँत बत्तीस होते हैं और आँखें सिर्फ दो।

— वन्दना चौधरी (दिल्ली)

दो मूर्ख व्यक्ति रात के अंधेरे में बात करते हुए।

पहला : यार अगर मैं टार्च की रोशनी बराबर ऊपर रखूँ तो रोशनी के सहारे क्या तुम चाँद तक पहुँच जाओगे?

दूसरा : मुझे क्या पागल समझ रखा है। तूने टार्च बन्द कर दी तो मैं नीचे नहीं गिर पड़ूँगा।

— सोरांजली भाटिया (यमुना नगर)

एक आदमी : मैं अगले वर्ष दहेज विरोधी आंदोलन में भाग लूँगा।
दूसरा आदमी : अगले वर्ष ही क्यों, इस वर्ष क्यों नहीं?
पहला आदमी : क्योंकि इस वर्ष मेरी शादी है।

— आशीष कुमार दड़िया (झुन्झुनूँ)

मैनेजर : मुझे एक तगड़े और होशियार आदमी की जरूरत है।
उम्मीदवार : मेरी योग्यता का तो तआप इसी से अंदाजा लगा सकते हैं कि दस अन्य उम्मीदवारों को पीछे धकेलकर व दरबान को मैं अपने आपको को आपका भतीजा कहकर यहाँ तक आया हूँ।

— चन्द्रशेखर मेहता 'आजाद' (रतिया)

कमल : हर्ष, क्या तुम मुझे फुटबाल खिलाओगे?
हर्ष : भाई, फुटबाल खाने की चीज नहीं खेलने की चीज है।

— शंकर जी, कुकरेजा (दोडाईचा)

टीचर : बच्चो, तुम लोग किस-किस दिन पैदा हुए थे।
पहला बच्चा : मंगलवार को।
दूसरा बच्चा : शनिवार को।
तीसरा बच्चा : रविवार को।
चौथा बच्चा : सर, ये झूठ बोल रहा है। रविवार की तो छूट्टी होती है।

— अभिषेक पाण्डेय (इलाहाबाद)

सर्कस का 'शो' समाप्त हो चुका था। काफी देर के बाद भी जब 'रिंग मास्टर' अपने तम्बू में नहीं पहुँचा तो उसकी तचपत्नी को चिन्ता हुई। वह उसे खोजने निकली तो देखा वह शेरों वाले कटघरे में सो रहा है। देखते ही वह चिल्लाई—अच्छा तो तुम मुझसे डर कर यहाँ घुसे पड़े हों, डरपोक कहीं के।

— सुरेश खुराना 'पप्पी' (जीन्द)

टीचर : बच्चों बताओ, जब पानी बर्फ का रूप धारण कर लेता है तो उसमें क्या बदलाव आता हैय
एक बच्चा : जी, उसका रेट बढ़ जाता है। — सुनील कोहली (रेवाड़ी)

ज़ुलाई अंक रंग भरो प्रतियोगिता का परिणाम

प्रथम : साहिल राज (आयु 8 वर्ष)
बुलबुल कॉम्पलैक्स के पीछे
जीन्द (हरियाणा)

द्वितीय : ऋतिका देशवाल (आयु 10 वर्ष)
रिहाड़ी कालोनी, जम्मू तवी

तृतीय : अमनजोत कौर (आयु 12 वर्ष)
गुरु रामदास नगर, जी. टी. रोड
मोगा (पंजाब)

इन बच्चों को हँसती दुनिया की ओर से पुरस्कार भेजा जा रहा है।

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसन्द किया गया वे हैं —

अरविन्दर कौर (जालन्धर), इला गुप्ता (इटावा), तुलिका गुप्ता (कानपुर), अलका वर्मा (इटावा), रजनी बिष्ट (धनास, चंडीगढ़), धीरज गुप्ता (जनरल गंज, कानपुर), संजय राम (डोम्बी वाली, ठाणे), लक्की मदान (लोधी रोड, नई दिल्ली), रमणीक मरवाह (अलमोड़ा), मनप्रीत ढ़ीगरा (शालीमार बाग, दिल्ली), दीपक बत्तरा (रानी बाग, नई दिल्ली)

सितम्बर अंक की रंग भरो प्रतियोगिता

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है । इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भर कर 25 सितम्बर तक **सम्पादक 'हँसती दुनिया', सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009** को भेज दें । तीन सर्वश्रेष्ठ चित्रों पर पुरस्कार दिये जायेंगे।

पुरस्कारों की घोषणा हँसती दुनिया के नवम्बर अंक में की जायेगी । चित्र के नीचे दिये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पूरा पता (पिनकोड सहित) साफ-साफ अवश्य भरें। प्रतियोगिता में 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही हिस्सा ले सकते हैं ।

पुरस्कारों के विषय में 'सम्पादक, हँसती दुनिया' का फैसला अन्तिम और मान्य होगा ।

रंग भरो



नाम .... आयु ....

पूरा पता ....

....

....

.... पिन कोड

आवश्यक सूचनाएं

हँसती दुनिया (मासिक) को आप घर बैठे ही मंगवा सकते हैं। इसका वार्षिक शुल्क मात्र 30/- रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 300/- रुपये हैं । यह शुल्क आप नीचे लिखे पते पर मनीआर्डर/चैक/ बैंक ड्राफ्ट/ पोस्टल आर्डर आदि द्वारा भेज सकते हैं –

अध्यक्ष,

(पत्रिका विभाग)

सन्त निरंकारी मण्डल

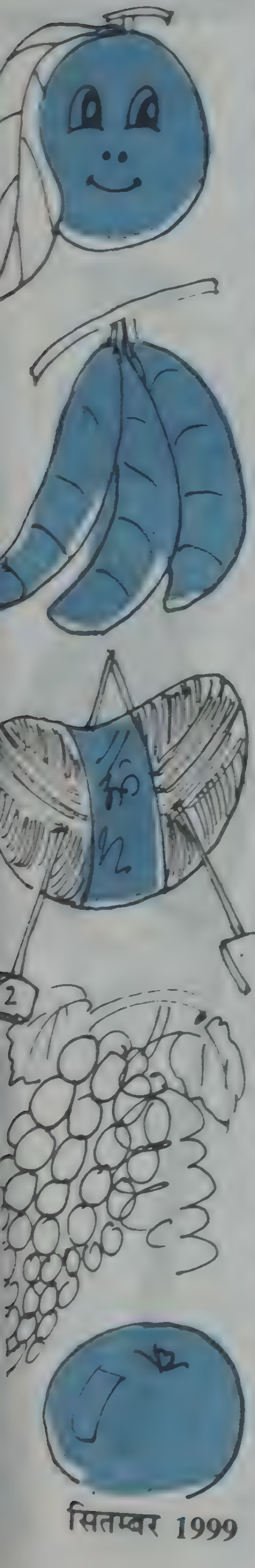
सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009

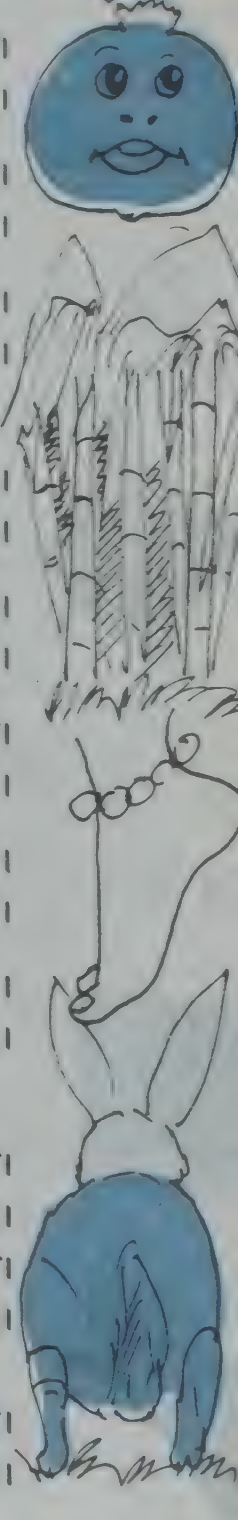
नोट : चैक/ड्राफ्ट आदि सन्त निरंकारी मणडल के नाम दिल्ली में देय होने चाहिए।

- जब भी आपका पता बदले तो पता बदलवाने के लिए पुराना व नया दोनों पूरे पते साफ-साफ व स्पष्ट अक्षरों में लिखें। चिट संख्या भी देंगे तो सुविधा होगी।
- अगर आप पहले से ही पत्रिका के सदस्य हैं तो पत्रिका का बकाया चन्दा भेजते समय भी कृपया अपना चिट नम्बर अवश्य लिखें।
- जिस लिफाफे में आपको पत्रिका मिलती है उसके ऊपर जहाँ आपका पता लिखा होता है, वहीं पर शुरू में आपका चिट नं. भी छपा होता है, उसे कृपया नोट कर लें।
- यदि आपको पत्रिका न मिलने की सूचना देनी हो तो वह चिट नं. भी साथ लिख दिया करें। इससे कार्य में सरलता हो जाती है।



दोहे





छोटा अ का अनार कहिए, बड़ा आ का कहिए आम।
करो पढ़ाई ध्यान से, यही तुम्हारा काम।।

छोटी इ की इमली कहिए, बड़ी ई की कहिए ईख।
मात-पिता गुरुदेव की, सेवा करना सीख।।

छोटा उ का उल्लू कहिए, बड़ा ऊ का कहिए ऊन।
प्राणी सभी समान हैं, लाल है सबका खून।।
बोलो ऋ ऋषि महाराज की जय....

ए की एड़ी बोलिए, ऐ की बोलो ऐनक।
पढ़ लिखकर अफसर बनो, बुद्धिमान और सैनिक।

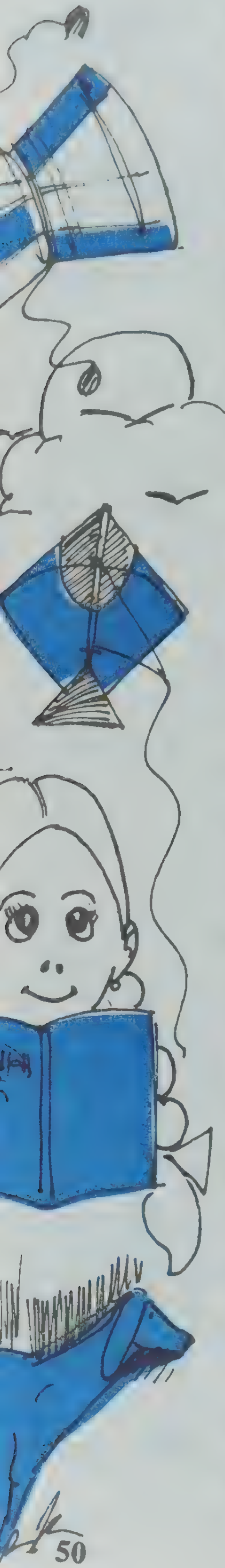
ओ से ओखली बनी, औ से बनी है औरत।
नेक काम करिए सदा, मिलेगी तुमको शौहरत।।

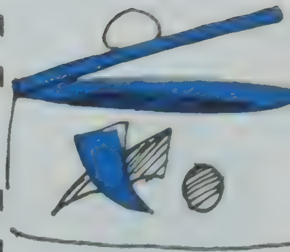
अं से अंगूर खाइए, अः से कुछ नहीं बोलो।
बन्द अकल का ताला ये, शाला में जाकर खोलो।।

क से कबूतर बना, ख से बना खरगोश।
जोश कभी आ जाये तो, रखना बच्चों होश।।

ग से गमला बोलिए, घ से बोलो घड़ी।
शिक्षा लो सज्जनों से, उनकी सीख बड़ी।।
बोलो ङ महाराज की जय....

च से चरखा चलाओ, छ से छाता खोल।
सूरज गोला आग का, पृथ्वी है ये गोल।।
ज से खाओ जलेबियाँ, झ से बहता झरना।
मरना हो तुमको अगर, तो अपने देश पर मरना।।
बोलो ञ महाराज की जय.....
ट से टमाटर कहो, ठ से कहो ठठेरा।
उठ जा बिस्तर छोड़ दे, होने लगा सबेरा।।





ड से डमरू बजाओ, ढ से खोलो ढक्कन।
गायों का पालन करो, खाओ दूध-घी-मक्खन।।
बोलो ण महाराज की जय....

त से तकली बोलिए, थ से बोलो थन।
विद्या धन के बराबर, नहीं दूसरा धन।।



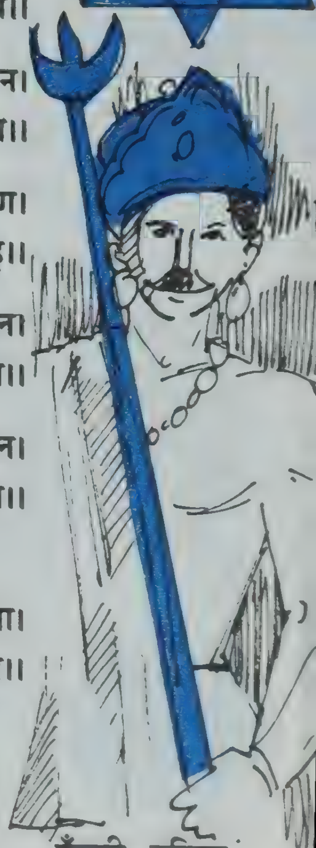
द से दवात बोलिए ध से बोल धनुष्य।
जो अनपढ़ रह जायेंगे वे पशु समान मनुष्य।।
बोलो न नल महाराज की जय.....

प से पतंग बोलिए, फ से बोलो फल।
याद करो अपना सबक, करना नहीं नकल।।



ब से बकरी है बनी, भ से बना भटा।
भेद भाव के भूत को, दिल से देओ हटा।।
बोलो म मछली महारानी की जय.....

य से बैठो यज्ञ में, र से रथ में घूम।
समय है आज पढ़ाई का, मस्ती में न झूम।।



ल से लड़कियाँ पढ़ें, व से बचाओ वन।
सत्य अहिंसा पर चलो, शुद्ध हो तन मन धन।।

स से सरोंता बना, ष से बना षटकोण।
जीवन में सुख चाहिए, तो गुरू से नाता जोड़।।

श से शीटी बजाओ, ह से चलाओ हल।
आज काम कर डालिए, जो करना है कल।।

क्ष से क्षत्रिय है बना, त्र से बना त्रिशूल।
सदा क्षमा ही मांगना, अगर हो तुमसे भूल।।
बोलो ज्ञ ज्ञानी महाराज की जय....

ड़ से सड़क बन गई, ढ़ से सदैव पढ़ना।
'परम' प्रेम करना सदा, कभी नहीं तुम लड़ना।।
बोलो श्र श्रवण भक्त की जय....

इति श्री ओलम कथा समाप्त।।

यदि आप चाहते हैं?

— संग्रहकर्ता : रीता कुमारी (देहरादून), रूपाली श्रीवास्तव (लखीमपुर खीरी)

यदि चलना चाहते हैं तो	—	सतमार्ग पर चलो।
यदि देखना चाहते हैं तो	—	दूसरे के गुणों को देखो।
यदि बोलना चाहते हैं तो	—	सदा सत्य व मधुर बोलो।
यदि खाना चाहते हो तो	—	अभिमान व घमण्ड को खाओ।
यदि पीना चाहते हो तो	—	गुस्सा पिओ।
यदि मारना चाहते हो तो	—	बुरे भावों को मारो।
यदि जीना चाहते हो तो	—	संघर्ष कर जीओ।
यदि छोड़ना चाहते हो तो	—	बुरी आदत व कुसंगति छोड़ो।
यदि सुनना चाहते हो तो	—	अमृत वचन सुनो।
यदि मरना चाहते हो तो	—	देश के लिए मरो।
यदि सुखी होना चाहते हो तो	—	सुख देना सीखो
यदि जानना चाहते हो तो	—	सत्संग के गुणों को जानो।
यदि जाना चाहते हो तो	—	नित सत्संग में जाओ।
यदि लेना चाहते हो तो	—	ब्रह्मज्ञान लो
यदि भक्ति चाहते हो तो	—	विश्वास करो
यदि छोड़ना चाहते हो तो	—	अहंकार को छोड़ो
यदि मिलना चाहते हो तो	—	संत महात्माओं से मिलो
यदि धारण करना चाहते हो तो	—	ईश्वर का नाम धारण करो।
यदि करना चाहते हो तो	—	प्रभु के नाम का प्रचार करो।

रचना आमंत्रण

आज सारा विश्व नयी सदी के स्वागत की तैयारी में जुटा है, ऐसे में हम साहित्यकार भी अपनी काव्य रचनाओं के माध्यम से नयी सदी का स्वागत करने जा रहे हैं। प्रस्तावित काव्य संग्रह ''स्वागत नयी सदी'' में रचनायें सादर आमंत्रित हैं। तीन रुपये के डाक टिकिट भेजकर अतिशीघ्र विस्तृत विवरण प्राप्त करें —

संग्रह संपादक : विजय कुमार मिश्र, 302 पोड़ी कला, गोसलपुर,

सिहोरा, जबलपुर— 483222 (म. प्र.)

माथापच्ची

संग्रहकर्ता : विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

1.	व र न्दे म मा त	(भारत का राष्ट्रीय गीत)
2.	स रा हा	(रेगिस्तान)
3.	ह दे स व	(पाँडवों में सबसे छोटा)
4.	प क्ष द्वी ल	(भारतीय केन्द्र शासित प्रदेश)
5.	ना र सी तु ब कु	(ऐतिहासिक स्मारक)
6.	रा खी	(सलाद में प्रयुक्त पदार्थ)
7.	टा न भू	(भारत का पड़ोसी देश)
8.	श ता गे ल क मं र	(प्रसिद्ध गायिका)
9.	रु त्र कु क्षे	(ऐतिहासिक जगह)
10.	चा णा द्रो र्य	(प्रसिद्ध गुरू)
11.	ब पं जा स री के	(अखबार)
12.	र र अ ह	(दाल)

उत्तर : 1. वन्देमातरम, 2. सहारा, 3. सहदेव, 4. लक्षद्वीप, 5. कुतुबमीनार, 6. खीरा, 7. भूटान, 8. लता मंगेशकर, 9. कुरुक्षेत्र, 10. द्रोणाचार्य, 11. पंजाब केसरी, 12. अरहर।

मूल

(जिससे वस्तु की तथा गुण या दोष की उत्पत्ति हो। उसे मूल कहते हैं। मूल ही विकसित होकर फल बनता है।)

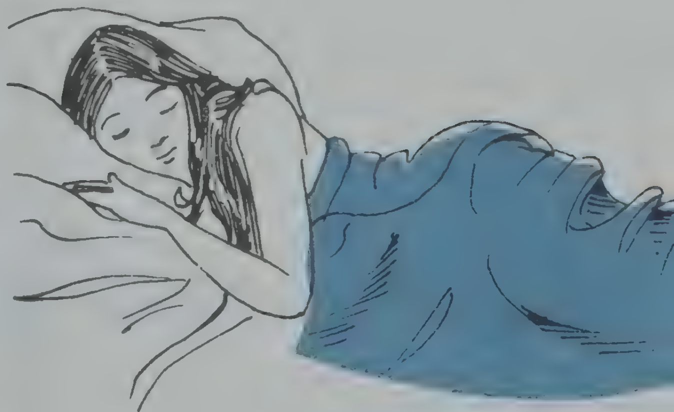
समस्त गुणों का मूल विनय है।
समस्त रसों का मूल पानी है।
समस्त पापों का मूल लोभ है।
समस्त धर्मों का मूल दया है।
समस्त कलह का मूल हँसी है। (दूसरों की)
समस्त रोगों का मूल अजीर्ण है।
समस्त प्रकार के मरण का मूल शरीर है।
समस्त बन्धनों का मूल स्नेह है।

— संग्रहकर्ता : सुमित जैन

कविता : कु. अंशु शुक्ला

नींद

शाम ढले जब आती नींद,
सारे काम छुड़ाती नींद,
पढ़ना लिखना मुश्किल होता,
इतना हमें सताती नींद।





अपने संग में लाती सपने,
सुख के सपने दुःख के सपने।
कभी रुलाते कभी हँसाते,
सपने हमको लगते अपने।



दुनिया के सब दुःख दर्दों से,
निंदिया हमें बचाती है।
डाँट मार औं घर के झगड़े,
निंदिया हमें भुलाती है।

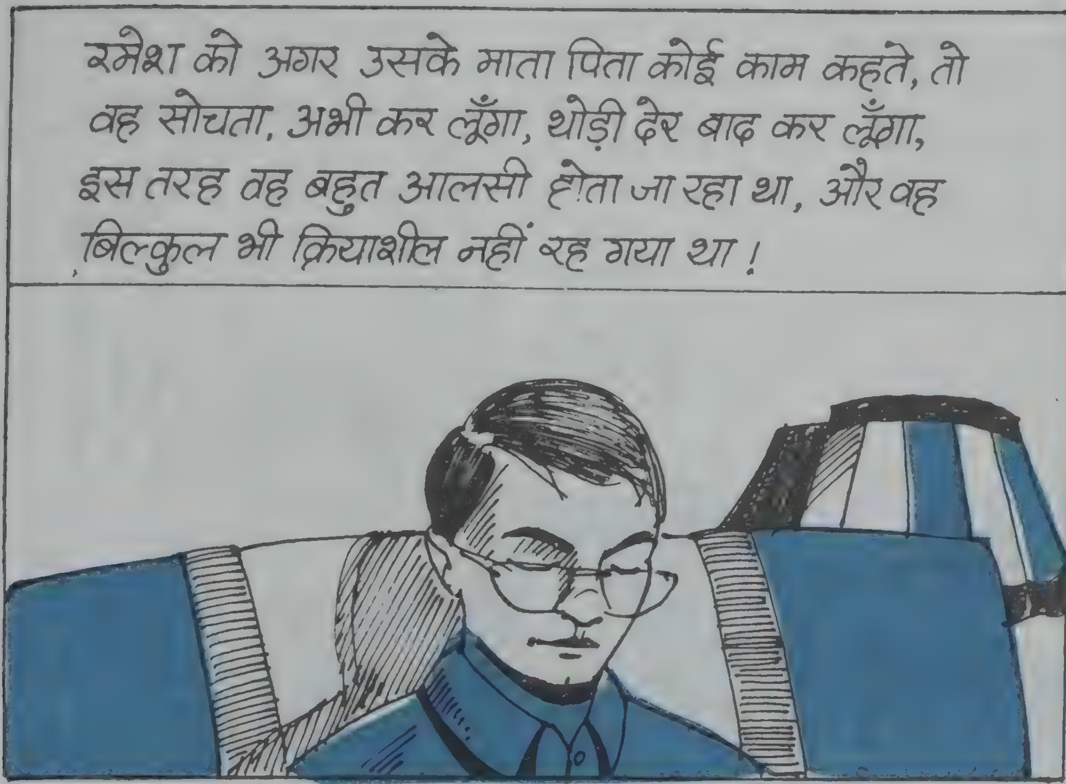


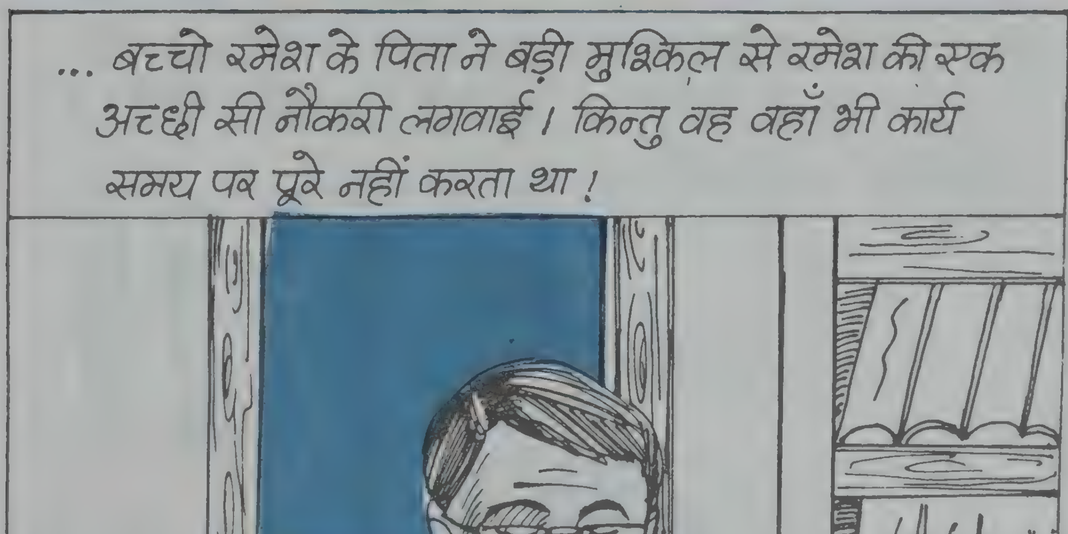
किन्तु अधिक सोने वालों को,
रहना पड़ता है नीचे।
और विश्व की तेज दौड़ में,
रह जाते हैं वे पीछे।

मास्टरजी

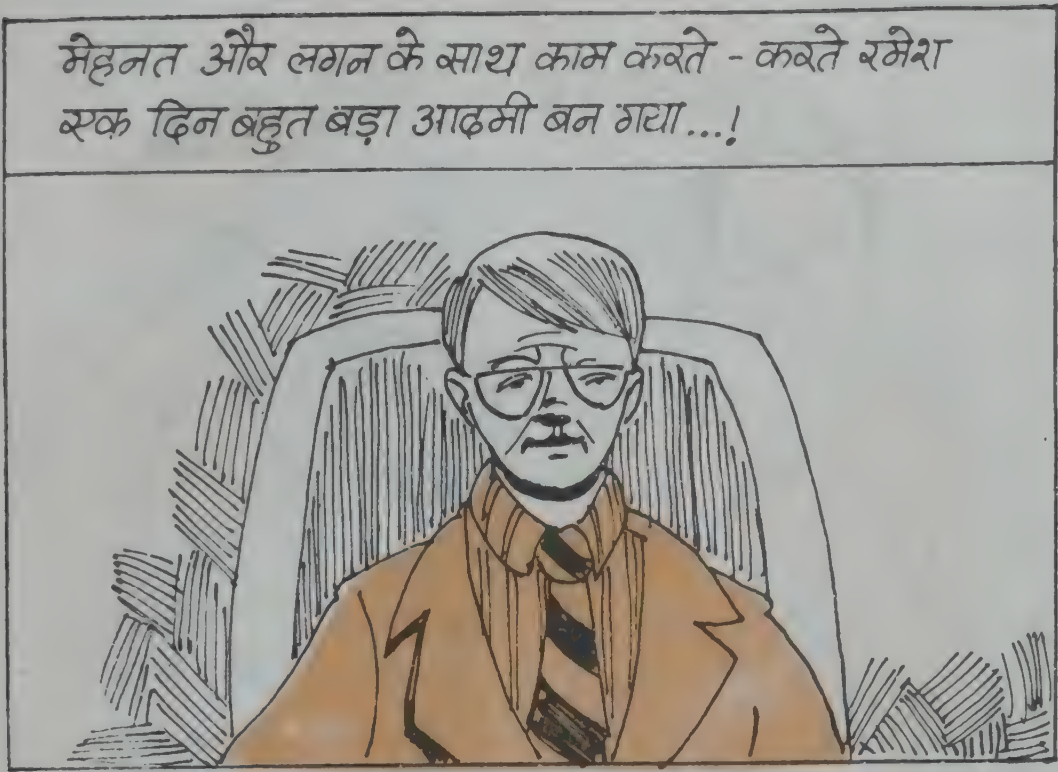
चित्रांकन-नितिन अहलावत कहानी - शिखा जोशी

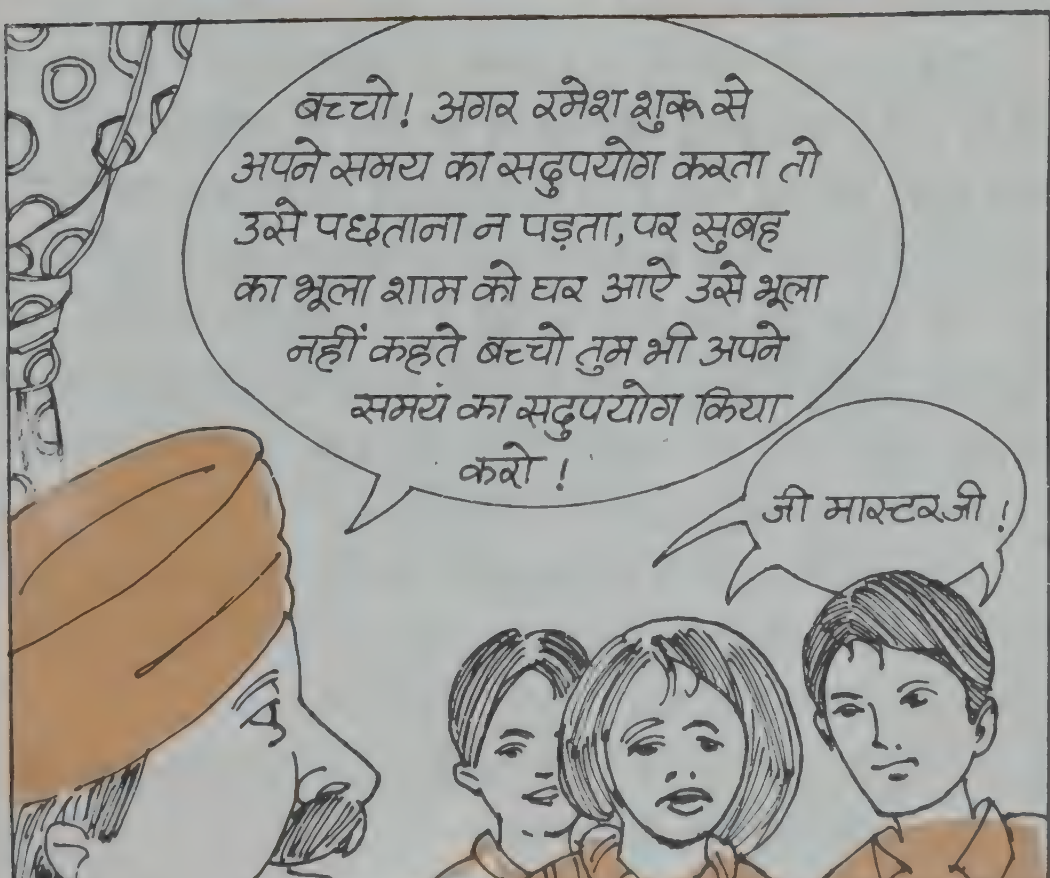



रमेश को अगर उसके माता पिता कोई काम कहते, तो वह सोचता, अभी कर लूँगा, थोड़ी देर बाद कर लूँगा, इस तरह वह बहुत आलसी होता जा रहा था, और वह बिल्कुल भी क्रियाशील नहीं रह गया था !


... बचचो रमेश के पिता ने बड़ी मुश्किल से रमेश की एक अचछी सी नौकरी लगवाई । किन्तु वह वहाँ भी कार्य समय पर पूरे नहीं करता था !


रमेश के आलसीपन के कारण उसे नौकरी से निकाल दिया गया, और उसके कारण उसके पिता को भी शर्मिंदा होना पड़ा...!
रमेश अपनी इस गलती पर बड़ा दुखी हुआ, और उसे समय खराब करने की कीमत का एहसास हुआ, और उसने एक छोटी सी नौकरी कर ली !


मेहनत और लगन के साथ काम करते - करते रमेश एक दिन बहुत बड़ा आदमी बन गया...!


बच्चो! अगर रमेश शुरू से अपने समय का सदुपयोग करता तो उसे पछताना न पड़ता, पर सुबह का भूला शाम को घर आए उसे भूला नहीं कहते बच्चो तुम भी अपने समय का सदुपयोग किया करो!
जी मास्टरजी!

अनूठा न्याय



बात जरा पुराने समय की है। एक बार दो व्यक्ति तीर्थ यात्रा के लिए जा रहे थे। रास्ते में शाम हो गई। उन्हें भूख भी लग आई थी। इसलिए एक पेड़ की छांव मैं बैठ गये। उन लोगों ने अपना-अपना खाना निकाल लिया एक के पास तीन रोटियाँ थी और दूसरे के पास पाँच। वे भोजन शुरु करने ही वाले थे कि एक और व्यक्ति वहाँ पर आ पहुँचा। दोनों ने उससे भी खाना खाने को कहा। वह राजी हो गया। तीनों ने साथ मिलकर खाना खाया। भोजन खत्म होने पर उस व्यक्ति ने खुश होकर उन्हें आठ रुपये दिये और कहा—इन रुपयों को आपस में बांट लेना। वह व्यक्ति रुपये देकर चला गया।

इधर उन दोनों यात्रियों में पैसे के बंटवारे को लेकर झगड़ा हो गया। जिस यात्री की पाँच रोटियाँ थीं वह चाहता था कि उसे आठ में से पाँच रुपये मिले, जबकि तीन रोटियों वाला यात्री आधे रुपये चाहता था।

आखिर जब वह आपस में कोई फैसला नहीं कर सके तो दोनों ने उस राज्य के राजा के पास चलने का निश्चय किया।

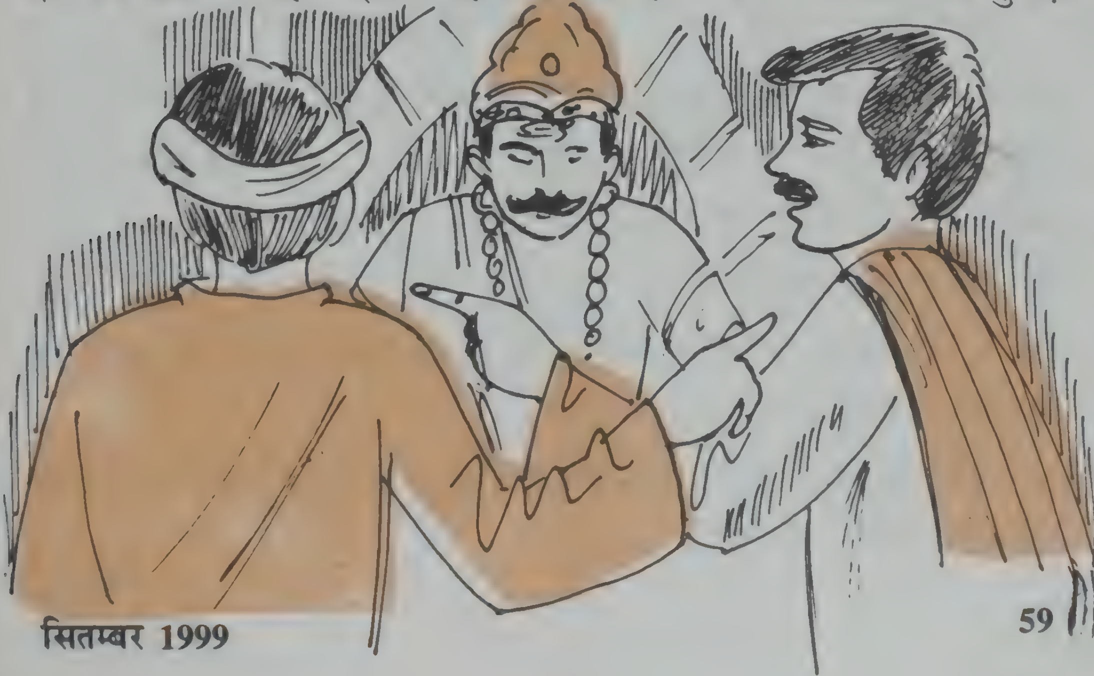


वहाँ का राजा अपने अनोखे निष्पक्ष न्याय के लिए प्रसिद्ध था। उस राजा ने उनकी पूरी बात सुनने के बाद पूछा—तीसरे यात्री ने कितनी रोटियाँ खायीं? दोनों ने जवाब दिया—यह तो नहीं बताया जा सकता क्योंकि हमने साथ खाना खाया था और प्रत्येक रोटी के बराबर-बराबर तीन टुकड़े कर लिये थे। राजा ने कहा, इसका मतलब कि तुम सबने बराबर-बराबर खायीं।

दोनों सहमत होते हुए बोले—जी हाँ।

तब राजा ने कहा—इसका अर्थ है कि प्रत्येक रोटी के तीन-तीन टुकड़े किये गये। इस तरह कुल आठ रोटियों के चौबीस टुकड़े हुए? है ना?

कुछ देर सोच विचार करने के बाद दोनों यात्रियों ने फिर हाँ में हामी भर दी। तब राजा ने कहा—इससे यह बात साफ है कि तीनों ने आठ-आठ टुकड़े





खाये तीन रोटियों के कुल नौ टुकड़े हुए जबकि पाँच रोटियों के पन्द्रह ठीक है न?

दोनों यात्रियों ने एक स्वर में कहा—जी हाँ बिल्कुल ठीक है। तब राजा ने अपना निर्णय सुनाते हुए कहा—तीन रोटियों वाले यात्री ने अपनी रोटियों के नौ टुकड़े में से केवल एक टुकड़ा उस यात्री को दिया। जबकि पाँच रोटियों वाले व्यक्ति ने अपने पन्द्रह टुकड़े में से सात टुकड़े उस यात्री को दिये। इस प्रकार पाँच रोटियों वाले यात्री ने अधिक त्याग किया। आठ रुपयों में से सात रुपये पाँच रोटियों वाले व्यक्ति को मिलने चाहिये, जबकि तीन रोटियों वाले यात्री को केवल एक रूपया मिलना चाहिये।

तीन रोटियों वाला यात्री इस तर्कपूर्ण न्याय का विरोध न कर सका और चुपचाप एक रुपया लेकर चल दिया।

□□□

कहानी : अमिता साहनी

परमात्मा सब ठीक करता है



एक राजा था। उसका एक मंत्री था। उसका नाम जयसिंह था। वह बहुत बुद्धिमान तथा समझदार था। एक बार राजा के राज्य पर साथ वाले राज्य ने आक्रमण कर दिया। वह बहुत दुःखी हुआ। वह अपनी जान बचाने के लिए गुप्त मार्ग से अपने मंत्री के साथ जंगल में पहुँच गया। उसके मंत्री को चाहे कोई दुःख हो या सुख हो वह हमेशा यही कहता कि परमात्मा जो करता है, अच्छा ही करता है।

परन्तु राजा को यह बात अच्छी न लगती। इसलिए जब भी वह मंत्री के मुख से यह बात सुनता तो जल भुन जाता। अब जब मंत्री और राजा अपनी जान बचाकर जंगल में पहुँचे तो मंत्री मन ही मन परमात्मा को धन्यावाद दे रहा था। उसने राजा से कहा—राजन, घबराने की क्या आवश्यकता है ईश्वर पर भरोसा रखो। वह जो भी करता है अच्छा ही करता है। हमारी पराजय का भी कोई भेद होगा जो हमें अभी तक पता नहीं चला है। राजा इस आशापूर्ण उत्तर से जल भुन गया। उसने मंत्री से कहा—तुम्हारा परमात्मा कितना निर्दयी है उसने मेरा राज पाट ताज-तख्त सभी कुछ मुझसे छीन लिया है।

बातें करते काफी समय बीत गया। अंधेरा छाने लगा और फिर वर्षा भी होने लगी। मौसम में एकदम ठंड छा गई। उन्हें सर्दी पीड़ा दे रही थी। उन्होंने आग जलाई परन्तु बौछार के साथ ही वह भी बुझ गई।

तभी राजा फिर भड़क कर मंत्री से कहा—तुम्हारा भगवान कितना निर्दयी है उसे हम पर जरा भी तरस नहीं आता।

इतने में उन्हें घोड़ों के टापों का स्वर सुनाई दिया। सिपाही घोड़ों पर बैठकर उनकी तरफ आ रहे थे। दुश्मनों के सिपाहियों को देखकर राजा का तो बुरा हाल हो रहा था। लेकिन अंधेरा होने के कारण राजा और मंत्री के घोड़े ही दिखाई दिए। तभी उनमें से एक ने कहा—जल्दी ढूँढ़ो वे भी यहीं कहीं छुपे होंगे। दूसरे ने कहा—जल्दी करो कल उन दोनों को फाँसी दे दी जायेगी और हमें बहुत सारा ईनाम मिलेगा। लेकिन वे राजा और मंत्री को न ढूंढ़ सके और अपना सा मुँह लेकर वापिस चले गए। इस तरह राजा और मंत्री की जान बच गई। तभी मंत्री ने राजा से कहा—महाराज, अब तो आपको ईश्वर पर भरोसा हो गया होगा कि परमात्मा जो भी करता है अच्छा ही करता है। यदि भगवान की कृपा से वर्षा न



होती तो सिपाही आग की रोशनी में हमें ढूँढ़ लेते और कल हमें फाँसी हो जाती। अब राजा अपने समझदार भक्त मंत्री की बातें सुनकर बहुत प्रभावित हुआ। अब उसे परमात्मा पर विश्वास हो गया।

उधर उसके राज्य में अचानक प्राकृतिक आपदाएँ आईं राजमहल में बैठा दुश्मन राजा महल के मलवे में दबकर ही मर गया। चारों और हाहाकार मच गई। उधर मंत्री और राजा दोबारा अपने राज्य में चले गये। बिना लड़े-भिड़े ही उन्हें राज्य पुनः प्राप्त भी हो गया कि प्रभु हर कार्य ठीक करता है। ❖❖❖

आपके पत्र मिले

मैं हँसती दुनिया का पुराना पाठक हूँ। लेकिन पत्र पहली बार लिख रहा हूँ। मेरे परिवार के सभी सदस्य इसे बड़े चाव से पढ़ते हैं। इसकी समस्त सामग्री ज्ञानवर्द्धक एवं रोचक लगती है। इसमें हमें दादा जी के उत्तर, पढ़ो और हँसो तथा कहानियां बहुत अच्छी लगती हैं। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि यह पत्रिका दिन दूगूनी और रात चौगूनी उन्नति करे।

— सुबोध मदान (नीलोखेड़ी)

मैं हँसती दुनिया का पुराना और नियमित पाठक हूँ। मेरे साथ-साथ मेरा परिवार भी इसे बहुत पसन्द करता है। और हर महीने हमें इस पत्रिका के आने का इन्तजार रहता है। इसमें जहाँ ज्ञानवर्द्धक जानकारियां मिलती हैं। वहीं मनोरंजन पूर्ण कहानियाँ भी पढ़ने को मिलती हैं।

जुलाई अंक में 'पढ़ा हुआ याद क्यों नहीं रहता' शिक्षाप्रद रहा। तथा 'यूं टूटा उसका घमण्ड' और 'अच्छा काम' कहानियाँ पढ़कर बहुत आनन्द आया।

आशा है आप आगे भी इसी प्रकार ज्ञानवर्द्धक कहानियां भेजते रहेंगे।

— राजकुमार नाहार (ट्यूकडा, अलवर)

मैं हँसती दुनिया का बहुत पुराना पाठक हूँ। इस प त्रिका का बहुत बेसब्री से इन्तजार करता हूँ। मुझे जुलाई अंक में कहानी यूँ टूटा असका घमण्ड तथा पहचान बहुत अच्छी लगी। पढ़ो और हँसो, मास्टर जी (चित्रकथा) अच्छी लगे। हमारी इच्छा है कि आप एक प्रतियोगिता और शुरू करें।

— कैलाश करेरा (पांदुर्णा, म. प्र.)

अगस्त अंक प्राप्त हुआ। इसमें 'जमींदार और बुढिया', 'देश भक्त चंकी', 'डूबना सूरज का' आदि कहानियां ज्ञानवर्द्धक लगीं। स्तम्भ भी सभी अच्छे थे।

— जगदीप वर्मा (करावल नगर, दिल्ली)

मैं हँसती दुनिया का नया पाठक हूँ। मुझे हँसती दुनिया का बेसब्री से इन्तजार रहता है। मुझे इसमें दादा जी के उत्तर, पढ़ो और हंसो आदि स्तम्भ तथा सभी कहानिया बहुत अच्छी लगती हैं। हम सब की हँसती दुनिया का हर महीने इन्तजार रहता है।

— प्रदीप कुमार सचदेवा

बाल कविता

बच्चे होते कितने प्यारे,
माँ-बाप की आँखों के तारे,
जग में लगे सबको प्यारे,
घर में लगे जैसे आकाश में तारे,
शैतानियाँ करते घर में चार सपेरे,
नटखट होते हैं बच्चे सारे,
आए यदि बच्चों पर दुःख,
दुःखी हो जाए घर में सारे।

— गुरविन्द्र सोनी (मण्डी डबवाली)


FOR
WEDDING
SAREES
SUIT
DUPATTAS
AND
LEHNGA
CHUNNIS

Registered with the Registrar of Newspaper
For India under RNI No. 25673/73

Delhi Postal Regd. No. DL- 11198/

For the WOMAN who cooks with her mind.



• SAFE • CONVENIENT • EFFICIENT • PORTABLE • ECO-FRIENDLY • TIME & ENERGY SAVING • CAN BE USED AS A FOOD WARMER

BEGINING OF THE END OF FIRE, FLAME, SMOKE & SWEAT IN YOUR KITCHEN.

Your kitchen will never be the same again & your cooking will have a lot more zing. Ortem Induction Cooking System is here. Brought to you in technical collaboration with Samsung-Shinwha of Korea, it opens up a whole new world. Now you can cook without flame, fire, smoke & sweat. You can even carry your cooking out of your kitchen and catch up on your favourite soaps on T.V., or gossip with friends in the cool environs of your living or Drawing rooms.

This festive season add more warmth to your feelings. Gift an Ortem Induction Cooking System to the people you Care for.

It is being successfully used in Five-Star hotels, high rise buildings, hospitals, clinics, beauty parlours, holiday resorts and households.

ORTEM
in collaboration with
SAMSUNG-SHINWHA
OF KOREA

METRO APPLIANCES LTD.
134/4 - 134/5, Zamrudpur, Kailash Colony, New Delhi-110 048
Ph. : 6219097, 98, 6215112 Fax No. : 6215113

INTERADS/D/96

Posted at N.D. P.S.O.
Prescribed dates 21st & 22n

Licence No. U (UN) 23/99
Licenced to Post
Without pre-payment